

“एकम् सद विप्रा बहुधा वदन्ति”
“महासाम्राज्य पदवी आरुढा परमेश्वरी”

॥ श्री हरिः ॥

॥ श्री श्रीरज्यति ॥

॥ श्री स्वामिनी जी ॥

श्री वैदिक सनातन व्रतोत्सव पर्व प्रकाशिनी

विक्रम सम्वत 2077, राष्ट्रीय (शक) सम्वत 1942
बार्हस्पत्य मानेन – श्री अनन्द संवत्सरे



॥ जय जय श्रीजी परम कृपालु शिव कामेश्वर वृहद् गोपाल ॥

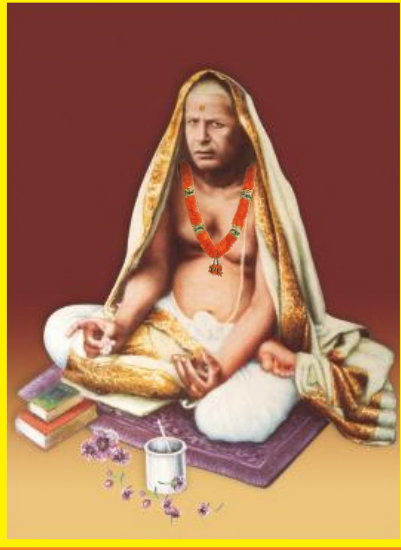
अखण्ड भूमण्डलाचार्य प्रातः स्मरणीय

अनन्त श्री विभूषिताचार्य श्री श्री शीलचन्द्राचार्य महाराजानां
ऊर्ध्वानाय सिद्ध श्रीपीठस्य (श्रीजी दरबार-बड़ी हवेली)

मतानुसारेण-सनातन धर्म मूल काल व्यापिन मतानुसारेण

श्री वैदिक सनातन धर्म परिषद द्वारा प्रवर्तित श्री वैदिक सनातन प्रकाशन द्वारा प्रकाशित

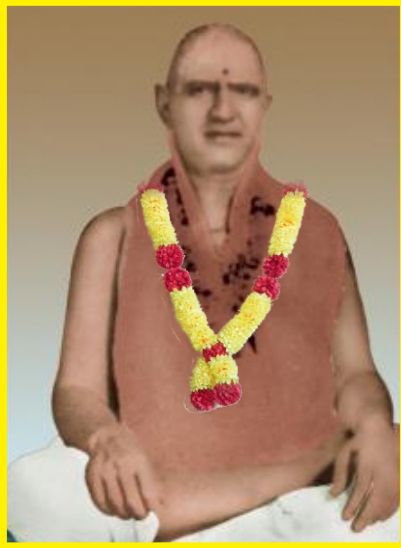
अखण्ड भूमण्डलाचार्य प्रातः स्मरणीय अनन्त श्री विभूषिताचार्य
उर्ध्वान्नाय सिद्ध श्रीपीलाधीश्वर श्री श्री श्रीपाद आचार्य



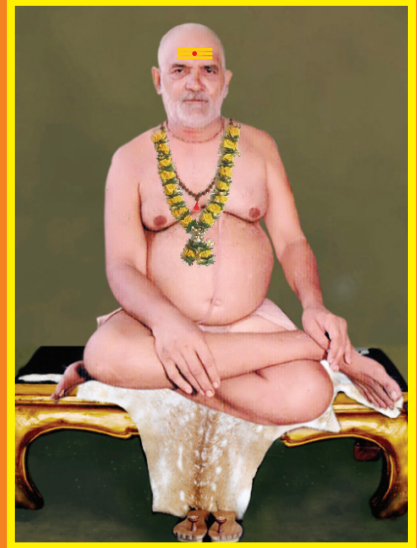
श्री श्री 1008 श्री वासुदेव जी बाबा महाराज



श्री श्री 1008 श्री केशवदेव जी महाराज
(गुरुजी महाराज)



श्री श्री 1008 श्री शिवप्रकाश देव जी महाराज
(लाल बाबा महाराज)

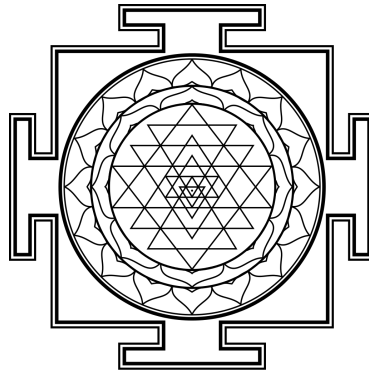


श्री श्री 1008 श्री लक्ष्मीपति देवाचार्य जी महाराज
(मुन्ना बाबा महाराज)

बिन्दुत्रिकोणवसुकोणदशार युग्ममन्वस्रनागदतासंयुत षोडशारम्
 वृत्तत्रयं च धरणी सदन त्रयं च श्रीचक्रमेतदुदितं परदेवतायाः ॥
 सा तेजः पुंजाकृतिःऽनामाख्या श्रीविद्येति, परब्रह्मस्वरूपिणी चिच्छक्तिः
 श्री विद्यैव अनामेति - भगवान् श्री गौडपादाचार्यः

“बिन्दु त्रिकोण, अष्ट कोण, दशकोण पुनः दशकोण, चतुर्दश कोण, अष्टदल पद्म, षोडश दल पद्म, त्रिवृत्त और चतुरस्र ऐसे महान् चक्रराज श्रीचक्र में जगत के एकमात्र अधिष्ठान अद्वय परतत्त्व परदेवता श्री श्रीजी महाराज का उदय होता है अर्थात् परदेवता का पूजन किया जाता है ।”

“परदेवता का वह तेज पुञ्ज वह परतत्त्व अद्वय परब्रह्म जो श्री विद्यान्तर्गत प्रकट होता है वह अनामाख्य है ।”



“जब मनुष्य अपनी मति को किसी विशिष्ट प्रकार की बना लेता है तब उसको तत्त्व का दर्शन नहीं होता है, उसे विशेषण का दर्शन होता है। जब किसी मत विशेष का आग्रह कर लोगे तो जो अमत है, जो सर्वतन्त्र स्वतन्त्र है जो सर्वोच्च परब्रह्म है जो तुम्हारी मति का भी प्रेरक है, जो तुम्हारी मति के भी पेट में बैठा हुआ है उस चिन्मात्र सर्वोच्च तत्त्व का दर्शन किस प्रकार होगा ? लाल, पीले, हरे चश्मे से तो लाल, पीला, हरा ही दिखेगा ना !”

“जिसके मन में सत्य से प्रेम नहीं होता, उसके मन में ज्ञान से भी प्रेम नहीं होता ।”

- अखण्डभूमण्डलाचार्य प्रातः स्मरणीय ऊर्ध्वान्नाय सिद्ध
 श्रीपीठाधीश्वर श्रीश्री 1008 श्री लक्ष्मीपतिदेवाचार्य जी महाराज
 (श्री मुन्ना बाबा महाराज)

श्री सत्यसनातनधर्मोविजयतेतराम्

॥ बाबा महाराजाय नमः ॥

प्राक्कथन

‘प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रम्’ ज्योतिषशास्त्र में प्रत्यक्षता का अर्थ होता है – “गणितागणित परिणाम का ज्यों का त्यों दिखलाई देना।” “ज्योतिषां सूर्यादि ग्रहाणां शास्त्रम्” – सूर्यादि ग्रह और काल का बोध कराने वाले शास्त्र को ज्योतिष शास्त्र कहा जाता है। अतः ज्योतिष में दृक् सिद्ध या प्रत्यक्षा का विशेष महत्व है। उदाहरणार्थ जिस समय गणित से पूर्णिमा आये उस समय चन्द्रमा का परिपूर्ण बिम्ब दिखलाई दे आदि-आदि। हमारे पूर्वज ऋषियों ने अत्यन्त सूक्ष्म निरीक्षण के द्वारा समय का विभाजन, उसका प्रभाव और देशकाल की स्थिति आदि का विवेचन कर उसको पूर्ण वैज्ञानिकता प्रदान की है।

दृश्य सृष्टि अर्थात् नाम, रूप और कर्मात्मक सृष्टि, हमारे वैदिक ऋषियों का यह स्पष्ट सिद्धान्त है कि इस नाम रूपात्मक आवरण के लिए आधार भूत एक अरूपी सर्वतन्त्र स्वतन्त्र और अविनाशी आत्मतत्त्व है जिसे – ‘इदं सर्वं यदात्मा ।’ – आत्मा वा इदं सर्वं ।’, ‘कालात्मा भगवान् स्वयं’ आदिक नामों से श्रुति पुकारती है और तदनुसार प्राचीन मनीषी और ऋषि ज्योतिष शास्त्र के लिए ज्योतिः शास्त्र’ ऐसा कथन करते हैं। कहने की आवश्यकता नहीं कि समस्त भारतीय वांगमय दर्शन या विज्ञान का एकमात्र लक्ष्य अपनी चेतना का विकास कर उसे परमात्मा में मिला देना या तत्तुल्य बना देना है। भारतीय दर्शन / विज्ञान की प्रमुख विशेषता आत्मा की प्रेष्ठता या आत्मज्ञान है। परन्तु वर्तमान में कई प्रकार की विसंगतियां देखने में आती हैं, जिनके कारण व्रत पर्वों आदि में भिन्नता आ जाती है, जिसका मुख्य कारण है – विभिन्न सम्प्रदायों की मान्यताएँ और कुछ आग्रह विशेष जो तद्-तद् सम्प्रदायों के नियामक ग्रन्थों पर आधारित होती हैं। सनातन धर्मशास्त्रों की व्यवस्था के अनुसार स्पष्ट है कि ‘कर्मणोयस्य यत्कालस्तदकाल व्यापिनी तिथिः’ अर्थात् कर्म के किये जाने के समय व्याप्त तिथि ही वास्तविक तिथि है। वास्तव में न तो सम्प्रदाय धर्म है और न ही धर्म सम्प्रदाय। धर्म मुख्य है और सम्प्रदाय गौण, धर्ममूल वेद हैं, इसमें कोई संशय नहीं है – ‘वेदोऽखिलो धर्ममूलः’।

व्रतोत्सव पर्व दीपिका के प्रकाशन का प्रमुख उद्देश्य सरलतापूर्वक सदृगृहस्थों को मूल सनातन धर्मानुसार व्रत-पर्व-उत्सवादिक का ज्ञान कराना है तथा मथुरास्थ वैदिक सनातन धर्म के पीठ – श्रीपीठ, श्री श्रीजी मंदिर, बड़ी हवेली, महाराजश्री की ठेक, गतश्रम टीला के उत्सवों एवं पर्वों की जानकारी देना है। ज्ञात रहे कि ‘श्रीपीठ – श्रीजी मंदिर’ बड़ी हवेली महान वेद वेदान्त वैदिक स्मार्त परम्परा का अवलम्बन करता है जो सर्वथा ऊर्ध्वरेता आप्तकाम ऋषियों की

गरिमा के अनुकूल है।

वास्तव में तो कालव्यापिनी तिथि ही हर स्थिति में हरेक व्यक्ति चाहे वह किसी भी सम्प्रदाय से हो, ग्रहण करता ही है। उद्धरण के लिये किसी बालक के जन्म की दशा में यदि जन्म रात्रि दस बजे है और नौ बजे तक नवमी तिथि है और उसके पश्चात् दशमी, तब दशमी ही जन्मतिथि ग्रहण की जायेगी। अतः समझा जा सकता है कि कालव्यापिनी ही सनातन धर्म का मूल सिद्धान्त है और यही सिद्धान्त क्षयादिक में भी अनुसरण किया जाता है। तब विसंगति विडम्बना ही है।

केवल एकादशी व्रत के सम्बन्ध में एक अलग व्यवस्था है, और वह भी केवल इसलिये कि एकादशी व्रत आध्यात्म से सम्बन्धित है, काल से सम्बन्धित नहीं। **ध्यान दें कि 'एकादशी तिथि नहीं, एकादशी व्रत और तदनुसार व्रतोत्सव पर्व दीपिका की व्यवस्था है।** हमारे महान प्रपितामह एवं गुरु **अखण्डभूमण्डलाचार्य प्रातःस्मरणीय ऊर्ध्वाम्नाय सिद्ध श्रीपीठाधीश्वर श्रीश्री 1008 श्री शिवप्रकाशदेव जी महाराज (श्री लालबाबा महाराज) जो भारतवर्ष के मान्य विद्वानों में थे, और आगम-निगम दोनों के विद्वान एकमत से आप से नतमस्तक थे, के शब्दों में, “उपोष्या द्वादशी शुद्धाः - द्वादशी ही एकादशी मानी जानी चाहिये एवं पंचदशी के दोनों कूटों का योग मान लेना चाहिये। दशमी विद्धा एकादशी उपोष्या नहीं होती, प्रत्युत द्वादशी विद्धा होनी चाहिये अन्यथा शुद्ध द्वादशी ही उपोष्या माननी चाहिये। “एकादश्यां दशमी वेधे दशमीत्वात्” “उपोष्या द्वादशी शुद्धेति वचनाद्द्वादश्या एवैकादशीत्वाच्चरमखण्ड ग्रहणीयाद्” - भाव यह है कि जब दशमी एकादशी में लय हो जाती है तो एकादशी को दशमी का अंश मानते हैं। शुद्ध द्वादशी ज्यों की त्यों रहती है। तदनुसार द्वादशी में एकादशी का अंश है। दश तिथियों एवं श्रीविद्या पंचदशी के दश अक्षरों का सम्बन्ध दश इन्द्रियों से है, **मन एकादशी है। मन का योग जब तक इन्द्रियों से बना रहता है, तब तक वह उपोष्या नहीं होती अर्थात् वृत्ति बहिर्मुखी रहती है।** बुद्धि द्वादशी, चित्त त्रयोदशी अहंकार चतुर्दशी और महत्तत्त्व पूर्णिमा है।” यही मत अठारवीं शताब्दी के उद्भूत विद्वान श्रीमान् भास्करराय जी आदि का भी है।**

व्रतोत्सव पर्व दीपिका में प्रत्येक तिथि के आगे उसकी समाप्ति का समय घण्टा मिनटों में दिया गया है। सर्वसुलभार्थ सर्वार्थ सिद्धि आदि योगों का समय भी घण्टा-मिनटों में ही दिया गया है। व्रतोत्सव पर्व दीपिका का मूल आधार केतकी चित्रापक्षीय दृक तुल्य गणित पंचांग ही है। प्रतिमास सूर्य संक्रांति की तिथि निरयन सूर्य के आधार पर ही है। प्राप्त सुझावों के अनुसार प्रत्येक पृष्ठ पर राहुकाल का समय भी दे दिया गया है। पिछली बार हमने वेद माता गायत्री के अक्षर पद और गायत्री त्रिपाद आदि का ज्ञान हो ऐसा लिखा तो उस पर प्रकाश डालने के लिए अत्यधिक आग्रह प्राप्त हुए। अतः वेदमाता गायत्री के स्वरूप पर कुछ प्रकाश 'श्रीपीठ - बड़ी हवेली' के आदेश/संदेश/उपदेश स्तंभ में दिया गया है। आशा है

धर्मप्रेमी आत्मीय जन लाभान्वित होंगे।

व्रतोत्सव पर्व दीपिका के आरम्भ में ऊर्ध्वाम्नाय श्रीपीठ, श्रीजी मन्दिर (बड़ी हवेली) में प्रति संवत्सर के आरम्भ में आयोजित नवरात्र महोत्सव का आमन्त्रण दिया गया है, जिसे धर्मप्रेमी सत्संगी आत्मीय आमन्त्रण समझें और महोत्सव में सम्मिलित होकर लाभान्वित हों। ऐसे ही शारदीय नवरात्र महोत्सव का आयोजन आश्विन शुक्ल पक्ष में किया जाता है जिसका विवरण 'तिथि पत्रक' में यथा स्थान दिया है, सभी धर्म प्रेमी/प्रभु प्रेमी जन दोनों महोत्सवों में सम्मिलित होकर लाभान्वित हों, कल्याण के भागी हों।

यह व्रतोत्सव-पर्व-दीपिका उद्भट् विद्वान् एवं मुमुक्षु ऋषि-परम्परा के पोषक एवं पालक मेरे सद्गुरु अखण्डभूमण्डलाचार्य प्रातः स्मरणीय ऊर्ध्वाम्नाय सिद्ध श्रीपीठाधीश्वर श्रीश्री 1008 श्री लक्ष्मीपतिदेवाचार्य जी महाराज, स्वामी विद्यानन्द जी एवं मेरे पितृचरण ऊर्ध्वाम्नाय सिद्ध श्रीपीठाधीश्वर श्रीश्री 1008 श्री सुरेश जी बाबा महाराज - स्वामी रघुनाथानन्द जी के चरणकमलों में सादर समर्पित है।

‘सर्वतन्त्र स्वतन्त्रान श्री चतुर्वेद कुलगुरुन।

विद्यागुरु श्री लक्ष्मीपतिदेवाचार्यः प्रणमामि मुहुर्मुहुः॥

भवन्तिः

ऊर्ध्वाम्नाय सिद्ध श्रीपीठाधीश्वर

अखण्ड भूमण्डलाचार्य प्रातः स्मरणीय

अनन्त श्री विभूषिताचार्य श्री श्री शीचन्द्राचार्य महाराजानां वंशावतंस

श्रीपाद् आचार्य श्रीकान्त श्रीजी महाराज ‘वेदान्त भूषण’

एम.ए. (संस्कृत) साहित्य तीर्थ सिद्धान्त ज्योतिषाचार्य

श्रीमद् भागवत, रामकथा एवं देवी भागवत के मर्मज्ञ प्रवक्ता

श्रीपीठ, श्री श्रीजी मंदिर (बड़ी हवेली)

महाराजश्री की ठेक, गतश्रमटीला, श्रीधाम मथुरा

॥ पराम्बा श्री राजराजेश्वर्यै नमः ॥ श्री श्रीजयति ॥ पराम्बा श्री राजराजेश्वर्यै नमः ॥

॥ जय जय श्रीजी परम कृपालु, शिवकामेश्वर वृहद् गोपाल ॥

**अखण्डभूमण्डलाचार्य श्री वैदिक सनातन सद्धर्म मार्ग संरक्षक
निगमागम सार हृदय माथुर चतुर्वेद ब्राह्मणों के कुलगुरु प्रातः
स्मरणीय श्री श्री शीलचन्द्राचार्य महाराज की ऊर्ध्वाम्नाय श्रीपीठ श्री
श्रीजी मंदिर, बड़ी हवेली, श्रीजी दरबार से नवरात्र आमंत्रण
वर्तमान पीठाधीश्वर - श्रीपाद् आचार्य श्रीकांत श्रीजी महाराज**

**‘यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते, येन जातानि जीवन्ति,
यत्प्रत्यभिसंविशन्ति । तद् विजिज्ञास्व, तद् ब्रह्म ।**

यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते, इत्यादि श्रुत्या उत्पत्ति, स्थिति, संहाराः परं ब्रह्मणा - ब्रह्मात्मशक्त्या भगवत्याः राजराजेश्वर्याः पराम्बा त्रिपुरसुन्दर्याः धर्माः श्रूयन्ते । उत्पत्तिं आश्रित्य कर्मकाण्ड प्रवृत्तिः, स्थितिम् आश्रित्य उपासना मार्गो - भक्तिमार्गो वा संहारम् आश्रित्य ज्ञानमार्गो - ज्ञानकाण्डो वा इति च त्रिदेव निर्णये व्याख्यातम् । इदमेव आश्रित्य तस्या च ब्रह्म विष्णु रुद्रादि संज्ञा क्रमेण भवति । मूल अधिष्ठानैक स्वरूपाः पराम्बा भगवत्याः राजराजेश्वर्याः लौकिक लिंगत्रेण अस्पृष्टम् सच्चिदानन्दैक विग्रहम् पुरातन महर्षीणां बहुचाख्य वेदर्षीणां स्थापितस्तथ्यः । तथापि परतत्वाः परब्रह्मपरमात्माः करुणावरुणालयाः मातृ रूपम् सर्वत्र सर्वाधिकं पूज्यं शास्त्र सम्मतं च, तथा ‘न मातुः परमस्ति दैवतम् ।’ अपराध परम्परावृत्तं न हि माता समुपेक्षते सुतम् । विपदि किं करणीयं स्मरणीयं चरण युगलमम्बायाः । इत्यादिभिर्हृद्यैः पद्यैः मातृरूपेणैव ध्येयत्वं निश्चीयते । त्रिविधदावदग्धानां भव भवन पतितानां पीयूषवेष्टैः परित्रातुं बद्ध परिकरायाः मातुश्चरणयोः शरणागति इति च परतत्त्वबोधनैक धिषणानां चित्संवित्स्वरूप लब्धानां निगमागमादि सार हृदयाणां श्रीविद्यापीठस्य आचार्याणां सम्यक् प्रकारेण विनिश्चितम् । अस्याः पारम्पर्याः देवीपर्व दिनानाम् विशिष्ट महत्वं मन्यते । अस्य क्रमेण सांवत्सरिक नवरात्र महोत्सव अपि अत्यंत महत्वपूर्ण मन्यन्ते ।

अस्मिन् महोत्सवे समागत्य गुरुपीठाचार्याणां शुभाशीर्वादं

संलभ्य परम पुण्यस्य भाजनं भवन्तु, इति शुभामन्त्रणम् ।

जिसके द्वारा यह सम्पूर्ण जगत् उत्पन्न होता है - इत्यादि श्रुति वाक्यों के अनुसार उत्पत्ति, स्थिति और संहार ब्रह्मब्रह्मात्म शक्ति अर्थात् ब्रह्म की सामर्थ्य

ब्रह्माभिन्न भगवती राजराजेश्वरी त्रिपुरसुन्दरी के ही धर्म जाने जाते हैं । उत्पत्ति द्वारा कर्मकाण्ड की प्रवृत्ति, स्थिति द्वारा उपासना मार्ग या भक्तिमार्ग और संहार द्वारा ज्ञानमार्ग (ज्ञानकाण्ड) का और तदनुसार त्रिदेवो का निर्णय किया जाता है। इसी आधार पर उसकी ब्रह्मा, विष्णु, रुद्रादि संज्ञा क्रम से होती है। ब्रह्माण्ड की एकमेव और मूल अधिष्ठान स्वरूपा पराम्बा भगवती राजराजेश्वरी लौकिक लिंगत्रय भेद से सर्वथा अस्पृष्ट हैं और सच्चिदानन्दैक विग्रह मात्र हैं, यह प्राचीन महर्षियों, वेद दृष्टा बहुचाख्य वेद पुरुषों का सुस्थापित सिद्धान्त है । फिर भी, परतत्त्व परब्रह्म परमात्मा का मातृ स्वरूप ही यत्र-तत्र-सर्वत्र और सर्वाधिक पूज्य है तथा शास्त्र सम्मत है।

शास्त्र वाक्य हैं कि - माता से बढ़कर कोई देवता नहीं है । 'कोई माता अपने अपराधी पुत्र की उपेक्षा नहीं करती ।' विपत्ति काल में श्रीमाता के चरणों का स्मरण करना चाहिये । इत्यादि प्रमाणों से मातृ रूप के ध्यान का ही निश्चय किया जाता है। त्रिविध तापों से संतप्त भवसागर में पड़े हुए जीवों के उद्धार के लिए अमृतवर्षा करने वाली माँ भगवती के श्री चरणों की शरणागति ही एकमात्र मार्ग है यही सर्वशास्त्र निष्णात परतत्त्वैक निष्ठ चित्संवित् स्वरूप लब्ध निगमागमादि सार हृदय श्री विद्यापीठ के आचार्यों का दृढ़ निश्चय है । उक्त परम्परा में नवरात्रादिक देवी पर्वों का विशेष महत्व है। इस क्रम में सांवत्सरिक नवरात्र चैत्र नवरात्र पर्व अत्यंत महत्वपूर्ण है ।

इस महोत्सव में सम्मिलित होकर गुरुपीठ के आचार्यों का शुभाशीर्वाद प्राप्त कर परम पुण्य के भागी बनें । यही हमारा शुभ आमंत्रण है ।

अस्तु श्री

सांवत्सरिक (वार्षिक) नवरात्र महोत्सव

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा बुधवार दिनांक २५ मार्च २०२० नवरात्रारम्भ
महाआरती सायं ७.३० बजे

चैत्र शुक्ल द्वितीया गुरुवार दिनांक २६ मार्च २०२०
महाआरती सायं ७.३० बजे

चैत्र शुक्ल तृतीया शुक्रवार दिनांक २७ मार्च २०२०
महाआरती सायं ७.३० बजे

चैत्र शुक्ल चतुर्थी शनिवार दिनांक २८ मार्च २०२०
महाआरती सायं ७.३० बजे

चैत्र शुक्ल पंचमी रविवार दिनांक २९ मार्च २०२०
महाआरती सायं ७.३० बजे

चैत्र शुक्ल षष्ठी सोमवार दिनांक ३० मार्च २०२०
महाआरती सायं ७.३० बजे

चैत्र शुक्ल सप्तमी मंगलवार दिनांक ३१ मार्च २०२०
महाआरती सायं ७.३० बजे

चैत्र शुक्ल अष्टमी बुधवार दिनांक १ अप्रैल २०२०
महाआरती रात्रि ९.३० बजे

चैत्र शुक्ल नवमी गुरुवार दिनांक २ अप्रैल २०२०
महाआरती सायं ७.३० बजे नवरात्र विसर्जन, सरस्वती पूजनम्
महाप्रसाद भण्डारा रात्रि ८.०० बजे से

महाप्रसाद स्थल : यज्ञशाला सत्संग भवन

श्रीपीठ श्रीजी मन्दिर, बड़ी हवेली

महाराज श्री की ठेक, गताश्रम टीला, मथुरा

इस महोत्सव में सम्मिलित होकर गुरुपीठ के आचार्यों का शुभाशीर्वाद प्राप्त कर परम पुण्य के भागी बनें । यही हमारा शुभ आमंत्रण है ।

भवन्तिः

ऊर्ध्वाम्नाय सिद्ध श्रीपीठाधीश्वर

अखण्ड भूमण्डलाचार्य प्रातः स्मरणीय

अनन्त श्री विभूषिताचार्य श्री श्री शीचन्द्राचार्य महाराज्ञानां वंशावतंस

श्रीपाद् आचार्य श्रीकान्त श्रीजी महाराज 'वेदान्त भूषण'

एम.ए. (संस्कृत) साहित्य तीर्थ, ज्योतिषाचार्य

श्रीमद् भागवत, रामकथा एवं देवी भागवत के मर्मज्ञ प्रवक्ता

मनु महाराज कहते हैं -

‘येनास्यपितरो याता येन याताः पितामहाः ।

तेन यायात्सतां मार्गं तेन गच्छन् रिष्यते ।’

यदि शास्त्रोक्त मार्ग बहुत से दीखें तो जिस मार्ग पर बाप-दादा-परदादा आदि गये हैं उसी मार्ग से आप भी जायें अर्थात् जो कुछ वे करते आये हैं वही आप भी करें। उस मार्ग से जाने से दुःख नहीं होता । इसमें बाप-दादा-परदादा आदि की उत्तरोत्तर प्रकृष्टता (Superiority) है।

॥ जय जय श्रीजी परम कृपालु, शिवकामेश्वर वृहद् गोपाल ॥

**अखण्डभूमण्डलाचार्य श्री वैदिक सनातन सद्धर्म मार्ग संरक्षक
निगमागम सार हृदय माथुर चतुर्वेद ब्राह्मणों के कुलगुरु प्रातः
स्मरणीय श्री श्री शीलचन्द्राचार्य महाराज की ऊर्ध्वाम्नाय श्रीपीठ श्री
श्रीजी मंदिर, बड़ी हवेली, श्रीजी दरबार से संदेश**

श्री विद्याजयन्ति पर विशेष :

उत्तिष्ठ मा स्वप्न अग्निमिच्छध्वं भारताः ।

राज्ञः सोमस्य तृप्तासः सूर्येण सयुजोषसः ।

(अरुणोपनिषद्)

जागृत सुप्त न हो, ज्योति प्रसन्न हो, कामनाओं अथवा इच्छाओं को भस्म करो, अमृत ग्रहण करो तथा शिव के साथ मिलन करो जो उमा के साथ रमण कर रहे हैं और इसमें सूर्य अग्नि की सहायता लो ।

हे श्री विद्योपासकाः, उत्तिष्ठत उपास्तिक्रमे प्रवर्तध्वम् । मा स्वप्न प्रमत्ता मा भूत, अन्तर्भावितव्यथौ वा कुण्डलिनीमिच्छध्वं इच्छादण्डे नाहव्येत्थापय ध्वम् । सूर्येण सयुजाविशुद्धयनाहत् चक्रयोर्मध्यवर्तिं सूर्य सहितेन तेनाग्निना । उषसो दग्धस्य द्रुतस्येति यावत् । सोमस्य उमया राजराजेश्वर्या सहितस्य राज्ञो राजराजेश्वरस्य सहस्रातीयचन्द्रमण्डलान्तर्गतस्य वा । अर्थादमृतेन तृप्तासो भवत तृप्यत । अग्निकुण्डलिनीमुत्थाप्य सूर्यकुण्डलिन्या संयोज्य ताभ्यां चन्द्रमण्डल शिवशक्तिसामरस्येन द्रावयित्वा तदुत्थामृतधाराभिर्द्विसप्ततिसहस्र नाडी मार्गानांपूर्य तृप्ता भवतेत्यर्थः ।

हे श्रीविद्योपासक उठो, अपनी निष्ठा में दृढ़ रहो । प्रमाद में मत पड़ो जागृत रहो, जिससे कुण्डलिनी जागृत रहे । सुप्त न हो, उसे भी सुप्त न होने दो । अग्नि - स्वाधिष्ठान की अग्नि इसे कुण्डलिनी में रूपान्तरित करो । इच्छा अर्थात् इसे अपनी इच्छा शक्ति से ऊर्ध्व करो । सूर्य अग्नि की सहायता से अर्थात् सूर्य जो अनाहत विशुद्धि के बीच में है और अग्नि जिसके साथ है । परम शिव चन्द्रबिम्ब में उमा के साथ है । अर्थात् कुण्डलिनी अग्नि को प्रज्वलित कर तथा कुण्डलिनी को सूर्य के साथ एक कर तथा इन दोनों को चन्द्रबिम्ब तक पहुंचाकर फिर शिव तथा शक्ति के साथ मिलन करा देते हैं । तब इस मिलन के परिणाम स्वरूप 72 हजार नाड़ियाँ अमृत की धाराओं से पुष्ट हो जाती हैं ।

वेदमाता गायत्री/सावित्री

‘गायन्तस्त्रायसे देवि तद्गायत्रीति गद्यसे ।’

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।

धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

(ऋग्वेद 3।62।10)

ये गायत्री मंत्र है इस गायत्री मंत्र के तीन पाद और 24 अक्षर हैं। गायत्री के तीन पाद हैं -

प्रथम पाद है : “भूमिरन्तरिक्षं द्यौरित्यष्टावक्षराण्यष्टाक्षर ह वा एकं गायत्र्यै पदमेतदु ह वास्या एतत्स यावदेषु त्रिषु लोकेषु तावद्ध जयति योऽस्या एतदेवं पदं वेद।”

(बृह0 5।14।1)

भूमि अन्तरिक्ष, द्यौ ये आठ अक्षर हैं। गायत्री के प्रथम पाद में भी आठ अक्षर हैं, ‘वरेण्यम्’ के स्थान में ‘वरणीयम्’ समझने से आठ अक्षर पूरे हो जाते हैं। अर्थात् तीनों लोक गायत्री का प्रथम पाद हैं। बृहदारण्यकी श्रुति है कि वह तीनों लोकों को जीतता है जो गायत्री के लोकत्रयी रूप इस प्रथम पाद की उपासना करता है।

द्वितीय पाद है : ‘ऋचो यजूंषि सामानि ।’

ये आठ अक्षर हैं, गायत्री के द्वितीय पाद में भी आठ अक्षर हैं अर्थात् तीनों वेद गायत्री का द्वितीय पाद है। बृहदारण्यकी श्रुति है कि वह वेदत्रयी के सम्पूर्ण फल को प्राप्त करता है जो गायत्री के वेदत्रयी रूप द्वितीय पाद की उपासना करता है।

तृतीय पाद है : ‘प्राणापान व्यान’

ये आठ अक्षर हैं। गायत्री के तृतीय पाद में भी आठ अक्षर हैं अर्थात् सम्पूर्ण प्राणी गायत्री के तृतीय पाद में आते हैं। बृहदारण्यकी श्रुति है कि जो इस प्रकार उपासना करता है वह सम्पूर्ण प्राणियों को जीतता है।

गायत्री का चौथा पाद तुरीय स्वरूप है जो रज तम आदि से पर दर्शनीय पद ब्रह्मरूप है। यही सर्वान्तरात्मा सूर्यादि रूप होकर सबके ऊपर तपता है। श्रुति कहती है कि वह इसी प्रकार श्री तथा यश से तपता है जो गायत्री के इस तुरीयपाद की उपासना करता है।

भगवान ऋषि याज्ञवल्क्य कहते हैं कि -

भूर्भुवः स्वरिति चैव चतुर्विंशाक्षरा तथा ।

गायत्री चतुरो वेदा ओंकारः सर्वमेव तु ।।

(ब्र0 यो0 याज्ञ0 2।66)

भूर्भुवः स्वः ये तीन महाव्याहृतियां, चौबीस अक्षर वाली गायत्री तथा चारों वेद निस्संदेह ओंकार स्वरूप हैं।

ऋषि कहते हैं कि -

ब्रह्म गायत्रीति - ब्रह्मैव गायत्री ।

(शत० ब्रा० ८ १५ १३ १७ एत० ब्रा० अ० १७ ख० ५)

ब्रह्म गायत्री है, गायत्री ही ब्रह्म है।

गायत्री परदेवतेति गदिता ब्रह्मैव चिद्रूपिणी ।

(गायत्री पु०)

गायत्री परम श्रेष्ठ देवता और चित्त रूपी ब्रह्म है ऐसा कहा गया है।

‘गरीयसी त्रिजगतां माता शतगुणैः पितुः ।’

(ब्रा० वै० पु० कृ० ज० अ० ५२ १३४)

ऋषि कहते हैं तत्त्व को ब्रह्म को शक्तिमान् कहने से उसका कुछ क्षुद्रत्व प्रकट होता है, अतः उन्हें शक्तिमान न कहकर शक्ति स्वरूप ही कहना चाहिये।

सैषा गायत्र्यै तस्मिंस्तुरीये दर्शते पदे परोरजसि प्रतिष्ठिता तद्वैतत्सत्ये प्रतिष्ठितम्।

(बृ० ५ ११४ १४)

श्रुति कहती है कि यह लोक त्रयी, वेदत्रयी, सर्वप्राणस्वरूप - त्रिपदा गायत्री इस चतुर्थ तुरीय पद में प्रतिष्ठित है इस प्रकार तुरीय चेतन रूप यह गायत्री प्रत्येक प्राणी के हृदय में स्वयं ज्योतिः प्रत्यगात्मा रूप से स्थित है।

इसका अर्थ यह हुआ कि लोकत्रयी वेदत्रयी और प्राणत्रयी वेद माता से ही उत्पन्न हैं -

गायत्री वेद जननी गायत्री पापनाशिनी ।

गायतत्र्यास्तु परं नास्ति दिवि चेह च पावनम् ।।

(याज्ञ० स्मृ०)

गायत्री वेद जननी है, पातक हारिणी है इससे अधिक पवित्र वस्तु दिव्यलोक और संसार में कोई भी नहीं है।

‘गायत्री छन्दसां मातेति ।’

(महा० नारायणोपनिषद् १५ ११)

‘गायत्री वेद माता हैं ।’

‘गायत्री वा इदं सर्वं भूतं यदिदं किंच....।

(छा० ३ ११२ ११)

यह सारी सृष्टि गायत्री ही है अथवा दृश्यमान जगत् की सारी सृष्टि में चर-अचर जो कुछ है, गायत्री हैं।

आयाहि वरदे देवि त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनी ।
 गायत्री छन्दसां मातर्ब्रह्मयोनिर्नमोऽस्तुते ।
 ओम् गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसि न हि
 पद्यसे नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परोरजसेऽसावदो मा प्रापदिति ।
 (बृ0 5।14।6)

हे गायत्री ! त्रैलोक्य पाद से तुम एक पाद वाली हो, त्रयी विद्या रूपं द्वितीय पाद से द्विपदी हो, प्राणादि तृतीय पाद से तुम त्रिपदी हो, तुरीय रूप चतुर्थ पाद से तुम चतुष्पदी हो अर्थात् तुम्हारे अनेक पाद हैं ।

जपनीय गायत्री मंत्र के सम्बन्ध में मनु महाराज कहते हैं कि -
 ओंकारपूर्विकास्ति स्रो महाव्याहृतयोऽव्ययाः ।
 त्रिपदा चैव सावित्री विज्ञेयं ब्रह्मणो मुखम् ॥
 योऽधीतेहन्यहन्येतां त्रीणि वर्षाण्यतन्द्रितः ।
 स ब्रह्म परमभ्येति वायुभूतः खमूर्तिमान् ॥

(मनु0 2।81-82)

ओं भूर्भुवः स्वः पूर्वक सावित्री मन्त्र का जप ब्रह्म प्राप्ति का द्वार है। जो अधिकारी प्रतिदिन ओं भूर्भुवः स्वः पूर्वक सावित्री का नियम से तीन वर्ष पर्यान्त जप करता है वह अवश्य ही ब्रह्म का साक्षात्कार करता है, वह वायु की तरह कामचारी होता है एवं ब्रह्म स्वरूप को प्राप्त होता है।

विधि यज्ञाज्जपयज्ञो विशिष्टो दशभिर्गुणैः ।
 उपांशुः स्याच्छतगुणः साहस्रो मानसः स्मृतः ॥

(मनु0 2।85)

दर्श पौर्णमासादि यज्ञ से प्रकृत प्रणवादि सहित गायत्री मन्त्र का जप दश गुना अधिक फल देता है । यह जप भी यदि उपांशु (जिसमें होठ न हिलें, केवल जिह्वा साध्य हो) तो शतगुणाधि फलदायी होता है । और केवल मानस हो तो सहस्रगुना अधिक फल देने वाला होता है।

मनु महाराज आज्ञा करते हैं कि ब्राह्मण यदि प्रतिदिन कम से कम एक सहस्र (1000) गायत्री का जप करे तो एक मास में ही अभीष्ट सिद्धि को पाता है ।

महर्षि विश्वामित्र मंत्र का अर्थ करते हुए कहते हैं कि -
 देवस्य सवितुर्यस्य धियो यो नः प्रचोदयात् ।
 भर्गो वरेण्यं तद् ब्रह्म धीमहीत्यथ उच्यते ॥

(विश्वामित्र)

“उस तेजस्वी ब्रह्म का हम ध्यान करते हैं जो हमारी बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करता है ।”

सूर्यार्घ्य विधि

भगवान् आश्वलायन के अनुसार सूर्यार्घ्य अर्घ्य दर्भपाणि अर्थात् हाथ में कुश लिए हुए जल से भरी अंजली को सूर्य के अभिमुख खड़े होकर ओंकार और व्याहृतियों के साथ सावित्री मन्त्र से तीन बार (अतिकाल होने पर चार बार) निवेदित करना चाहिए ।

‘असावादित्यो ब्रह्म ।’ कहते हुए अर्घ्य देना चाहिए ।

यह आदित्य ही ब्रह्म है इसलिए प्रदक्षिणा पूर्वक घूमते हुए अर्घ्य जल का श्रद्धा से स्पर्श करना चाहिए । यही अर्घ्य निवेदन करना है ।



गायत्री ध्यानम्

मुक्ता, विद्रुम, हेम, नील, धवलच्छायैर्मुखैः तीक्ष्णैः ।

युक्तामिन्दु निबद्ध रत्नमुकुटां तत्त्वार्थवर्णात्मिकाम् ॥

गायत्री वरदाभयांकुशकशा शुभ्रंकपालं गुणं ।

शखं चक्र मथारविन्द युगलं हस्तैः वहन्तीं भजे ॥

माँ गायत्री पांच मुख वाली हैं – मुक्ता अर्थात् मोती जैसा विद्रुम अर्थात् मूंगे जैसा, हेम अर्थात् सुवर्ण जैसा, नीलमणि जैसा, और धवल अर्थात् स्वच्छ । आपके तीन नेत्र हैं । आपके रत्न जटित मुकुट पर चन्द्रमा हैं और आपका श्री विग्रह मन्त्र वर्णात्मक है ।

॥ सावित्र्यै नमः ॥ गायत्र्यै नमः ॥

भगवदाश्रित

ऊर्ध्वाम्नाय सिद्ध श्रीपीठाधीश्वर

अखण्ड भूमण्डलाचार्य प्रातः स्मरणीय

अनन्त श्री विभूषिताचार्य श्री श्री शीचन्द्राचार्य महाराज्ञानां वंशावतंस

श्रीपाद् आचार्य श्रीकान्त श्रीजी महाराज ‘वेदान्त भूषण’

एम.ए. (संस्कृत) साहित्य तीर्थ, ज्योतिषाचार्य

श्रीमद् भागवत, रामकथा एवं देवी भागवत के मर्मज्ञ प्रवक्ता

॥ श्री मन्महागणाधिपतये नमः ॥

॥ श्री श्रीजी महाराज की जय ॥



॥ श्री गोपाल जी महाराज की जय ॥

॥ श्री गुरुजी महाराज की जय ॥

॥ श्री बाबा महाराज की जय ॥

वि०सं० 2077

शाके 1942

ईस्वी सन् 2020-21

चैत्र (मधुश्री) शुक्ल पक्ष

वसन्त ऋतु

सूर्य उत्तरायण-उत्तरगोले

तिथि	समाप्ति घं०मि०	वार	नक्षत्र	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	17.26	बुध	रेवती	25.03.20	मीन	श्रीनववर्षारम्भ, कलशस्थापन, सांवत्सरिक नवरात्रारम्भ श्रीपीठ, श्रीधाम मथुरा, वासन्त चक्रान्तर्गत, गुडी पड़वा
द्वितीया	19.53	गुरु	रेवती	26.03.20	मेष 07.15	चंद्र दर्शनम्, झूलेलाल जयन्ती, सर्वार्थ सिद्धि योग 06.39, पंचक समाप्त 07.15
तृतीया	22.12	शुक्र	अश्विनी	27.03.20	मेष	श्री मत्स्य जयन्ती, सौभाग्य तृतीया, गणगौर पूजन, सर्वार्थ सिद्धि योग 10. 08 तक
चतुर्थी	24.17	शनि	भरणी	28.03.20	वृष 19.29	श्री गणेश दमनक चतुर्थी, भद्रा 11.14 से 24.17 तक, वृष में शुक्र 15.37
पंचमी	26.01	रवि	कृतिका	29.03.20	वृष	श्री पंचमी, देवीपर्व
षष्ठी	27.14	सोम	रोहिणी	30.03.20	मिथुन 30.05	श्री यमुनाषष्ठी महोत्सव, यमुनापूजनम् स्कन्दषष्ठी, सर्वार्थ सिद्धि योग 06.34 से 30.33 तक, अमृत सिद्धि योग 17.17 से 30.33 तक
सप्तमी	27.49	मंगल	मृगशिरा	31.03.20	मिथुन	भद्रा 27.49 से
अष्टमी	27.40	बुध	आर्द्रा	01.04.20	मिथुन	श्री दुर्गाष्टमी, निशीथ पूजनम्, महाआरती रात्रि 9.30 बजे, श्रीपीठ, श्रीजी मंदिर, श्रीधाम मथुरा, अशोकाष्टमी, भद्रा 15.44 तक
नवमी	26.42	गुरु	पुनर्वसु	02.04.20	कर्क 13.32	श्री दुर्गानवमी पूजा श्री तारा जयन्ती महोत्सव महोत्सव, नवमी पूजनम्, महाआरती सायं 7.00 प्रसादम-भण्डारा रात्रि 8.00 बजे से, नवरात्र विसर्जनम्, श्रीपीठ श्रीजी मंदिर, आरती श्री रामनवमी व्रत, सर्वार्थ सिद्धि योग 06.31 से 30.30 तक, अमृत गुरु पुष्य योग 19.27 से 30.30 तक
दशमी	24.58	शुक्र	पुष्य	03.04.20	कर्क	श्री धर्मराज दशमी
एकादशी	22.30	शनि	अश्लेषा	04.04.20	सिंह 17.07	कामदा एकादशी व्रत, भद्रा 11.08 से 22.30 तक
द्वादशी	19.14	रवि	मघा	05.04.20	सिंह	हरिदमनोत्सव, विष्णुद्वादशी, प्रदोष व्रत
त्रयोदशी	15.51	सोम	पूर्वा फा०	06.04.20	कन्या 17.31	अनंग त्रयोदशी, श्री महावीर जयन्ती
चतुर्दशी	12.01	मंगल	उत्तरा फा०	07.04.20	कन्या	शिवदमनक चतुर्दशी, पूर्णिमाव्रत, भद्रा 12.01 से 22.03 तक
पूर्णिमा	08.04	बुध	चित्रा	08.04.20	तुला 16.33	श्री हनुमान जयन्ती, चैत्री पूर्णिमा, देवीपर्व, वैशाख स्नान प्रारंभ

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त
प्रतिपदा	25.03.2020	06.40	18.47
अष्टमी	01.04.2020	06.32	18.51
पूर्णिमा	08.04.2020	06.25	18.54

वार	समय	राहुकाल	बुध दिवा
रवि	सायं	४।३० से ६।०	गुरु दिवा १।३० से १।३०
सोम	प्रातः	७।३० से ६।०	शुक्र प्रातः १०।३० से १२।०
मंगल	दिवा	३।० से ४।३०	शनि प्रातः ६।० से १०।३०

॥ श्री मन्महागणाधिपतये नमः ॥

॥ श्री श्रीजी महाराज की जय ॥



॥ श्री गोपाल जी महाराज की जय ॥

॥ श्री गुरुजी महाराज की जय ॥

॥ श्री बाबा महाराज की जय ॥

वि०सं० 2077

शाके 1942

ईस्वी सन् 2020-21

वैशाख (माधव) कृष्ण पक्ष

वसन्त-ग्रीष्म ऋतु

सूर्य उत्तरायण-उत्तरगोले

तिथि	समाप्ति घं०मि०	वार	नक्षत्र	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	28.13	बुध	—	08.04.20	—	प्रतिपदा क्षय
द्वितीया	24.38	गुरु	स्वाति	09.04.20	तुला	
तृतीया	21.31	शुक्र	विशाखा	10.04.20	वृश्चिक 16.25	भद्रा 11.04 से 21.31, सर्वार्थ सिद्धि योग 21.54 से 30.22, वैशाखी चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय रात्रि 21.41
चतुर्थी	19.01	शनि	अनुराधा	11.04.20	वृश्चिक	
पंचमी	17.15	रवि	ज्येष्ठा	12.04.20	धनु 19.12	सर्वार्थ सिद्धि योग 19.12 से 30.20
षष्ठी	16.18	सोम	मूल	13.04.20	धनु	भद्रा 16.18 से 28.15, मेष संक्रान्ति (विषुव संज्ञक) 20.21, वैशाखीपर्व
सप्तमी	16.11	मंगल	पूर्वाषाढा	14.04.20	मकर 25.26	
अष्टमी	16.51	बुध	उत्तराषाढा	15.04.20	मकर	शीतला पूजा बूढ़ा बासोड़ा
नवमी	18.11	गुरु	श्रवण	16.04.20	मकर	
दशमी	20.03	शुक्र	धनिष्ठा	17.04.20	कुंभ 12.17	भद्रा 07.07 से 20.03 तक, पंचक प्रारंभ 12.17
एकादशी	22.17	शनि	शतभिषा	18.04.20	कुंभ	बरुथिनी एकादशी व्रत, श्री वल्लभाचार्य जयन्ती
द्वादशी	24.42	रवि	पूर्वा भाद्रपदी	19.04.20	मीन 24.37	ग्रीष्मऋतु प्रारंभ
त्रयोदशी	27.11	सोम	पूर्वा भाद्रपदी	20.04.20	मीन	भद्रा 27.11 से, प्रदोष व्रत
चतुर्दशी	29.37	मंगल	उत्तरा भाद्रपदी	21.04.20	मीन	भद्रा 16.24 तक, सर्वार्थ सिद्धि योग 06.12 से 10.22 तक, मास शिवरात्रि
अमावस्या	सर्वेषाम	बुध	रेवती	22.04.20	मेष 13.17	पंचक समाप्त 13.17, पितृकार्य अमावस्या, श्री शुक्रदेव जयन्ती
अमावस्या	07.55	गुरु	अश्विनी	23.04.20	मेष	सर्वार्थ सिद्धि योग 06.10 से 16.04 तक, देवकार्य अमावस्या

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त
द्वितीया	09.04.2020	06.24	18.54
अष्टमी	15.04.2020	06.18	18.57
अमावस्या	23.04.2020	06.10	18.01

वार	समय	राहुकाल	बुध	दिवा
रवि	सायं	४।३० से ६।०	गुरु	दिवा १।३० से १।३०
सोम	प्रातः	७।३० से ६।०	शुक्र	प्रातः १०।३० से १२।०
मंगल	दिवा	३।० से ४।३०	शनि	प्रातः ६।० से १०।३०

॥ श्री मन्महागणाधिपतये नमः ॥

॥ श्री श्रीजी महाराज की जय ॥
॥ श्री गुरुजी महाराज की जय ॥



॥ श्री गोपाल जी महाराज की जय ॥
॥ श्री बाबा महाराज की जय ॥

वि०सं० 2077

शाके 1942

ईस्वी सन् 2020-21

वैशाख (माधवश्री) शुक्ल पक्ष

ग्रीष्म ऋतु

सूर्य उत्तरायण-उत्तरगोले

तिथि	समाप्ति घं०मि०	वार	नक्षत्र	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	10.01	शुक्र	भरणी	24.04.20	वृष 25.14	पाराशर ऋषि जयन्ती, मेष में बुध 26.33
द्वितीया	11.51	शनि	कृतिका	25.04.20	वृष	चन्द्रदर्शन, सर्वार्थ-अमृत सिद्धि योग 20.57 से 30 .08 तक, शिवाजी जयन्ती, श्री परशुराम जयन्ती
तृतीया	13.22	रवि	रोहिणी	26.04.20	वृष	अक्षय तृतीया, त्रेतायुगादिः, श्री मातंगी महाविद्या जयन्ती, भद्रा 25.56 से
चतुर्थी	14.29	सोम	मृगशिरा	27.04.20	मिथुन 11.45	भद्रा 14.29 तक, सर्वार्थ-अमृत सिद्धि योग 06.07 से 24.28 तक
पंचमी	15.07	मंगल	आर्द्रा	28.04.20	मिथुन	श्री शंकराचार्य जयन्ती, श्री सूरदास जयन्ती, श्री रामानुजाचार्य जयन्ती
षष्ठी	15.12	बुध	पुनर्वसु	29.04.20	कर्क 19.57	
सप्तमी	14.39	गुरु	पुष्य	30.04.20	कर्क	श्री गंगा सप्तमी, भद्रा 14.39 से 26.03 तक, सर्वार्थ - अमृत सिद्धि - गुरुपुष्य योग 06.05 से 25.52 तक
अष्टमी	13.26	शुक्र	अश्लेषा	01.05.20	सिंह 25.04	देवी श्री बगलामुखी महाविद्या जयन्ती, श्री जानकी नवमी
नवमी	11.35	शनि	मघा	02.05.20	सिंह	
दशमी	09.09	रवि	पूर्वा फा०	03.05.20	कन्या 27.08	भद्रा 19.41 से, सर्वार्थ सिद्धि योग 21.42 से 30.02 तक
एकादशी	06.12	सोम	उत्तरा फा०	04.05.20	कन्या	मोहिनी एकादशी व्रत, भद्रा 06.12 तक
द्वादशी	26.53	—	—	—	—	द्वादशी क्षय
त्रयोदशी	23.21	मंगल	हस्त	05.05.20	तुला 27.14	भौम प्रदोष व्रत
चतुर्दशी	19.44	बुध	चित्रा	06.05.20	तुला	श्री नृसिंह चतुर्दशी, देवी श्री छिन्नमस्ता महाविद्या जयन्ती, पूर्णिमा व्रत, भद्रा 19.44 से 29.59 तक,
पूर्णिमा	16.14	गुरु	स्वाति	07.05.20	वृश्चिक 27.12	श्री कूर्म जयन्ती, सत्यव्रत, श्री बुद्ध जयन्ती

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त
प्रतिपदा	24.04.2020	06.10	19.02
अष्टमी	01.05.2020	06.04	19.06
पूर्णिमा	07.05.2020	06.00	19.09

वार	समय	राहुकाल	बुध दिवा
रवि	सायं ४:३० से ६:१०	गुरु दिवा १:३० से ३:१०	
सोम	प्रातः ७:३० से ९:१०	शुक्र प्रातः १०:३० से १२:१०	
मंगल	दिवा ३:१० से ४:३०	शनि प्रातः ६:१० से १०:३०	

॥ श्री मन्महागणाधिपतये नमः॥

॥ श्री श्रीजी महाराज की जय॥



॥ श्री गोपाल जी महाराज की जय॥

॥ श्री गुरुजी महाराज की जय॥

॥ श्री बाबा महाराज की जय॥

वि० सं० २०७७

शाके १९४२

ईस्वी सन् २०२०-२१

ज्येष्ठ (शुक्रश्री) कृष्ण पक्ष

ग्रीष्म ऋतु

सूर्य उत्तरायण-उत्तरगोले

तिथि	समाप्ति घं०मि०	वार	नक्षत्र	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	13.01	शुक्र	विशाखा	08.05.20	वृश्चिक	श्री नारद जयन्ती, वीणा दान, सर्वार्थ सिद्धि योग 08.37 से 29.59
द्वितीया	10.15	शनि	अनुराधा	09.05.20	धनु 29.01	भद्रा 21.10 से, वृष में बुध
तृतीया	08.03	रवि	मूल	10.05.20	धनु	ज्येष्ठ चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय रात्रि 22.40, भद्रा 08 .03 तक, सर्वार्थ सिद्धि योग 05.58 से 28.12
चतुर्थी	06.35	सोम	पूर्वाषाढा	11.05.20	धनु	वक्री शनि 09.29
पंचमी	29.53	—	—	—	—	पंचमी क्षय
षष्ठी	अहोरात्र	मंगल	उत्तराषाढा	12.05.20	मकर 10.15	
षष्ठी	05.59	बुध	श्रवण	13.05.20	मकर	भद्रा 05.59 से 18.25,
सप्तमी	06.51	गुरु	श्रवण	14.05.20	कुंभ 19.21	वृष संक्रान्ति (विष्णुपदी संज्ञक) पंचक प्रारंभ 19.21, कालाष्टमी
अष्टमी	08.22	शुक्र	धनिष्ठा	15.05.20	कुंभ	
नवमी	10.22	शनि	शतभिषा	16.05.20	कुंभ	भद्रा 23.33 से
दशमी	12.42	रवि	पूर्वा भाद्रपदी	17.05.20	मीन 07.13	भद्रा 12.42 तक, सर्वार्थ सिद्धि योग 13.57 से 29.54 तक
एकादशी	15.08	सोम	पूर्वा भाद्रपदी	18.05.20	मीन	अपरा एकादशी व्रत
द्वादशी	17.31	मंगल	उत्तरा भाद्रपदी	19.05.20	मेष 19.52	पंचक समाप्त 19.52, सर्वार्थ-अमृत सिद्धि योग 19.52 से 29.53 तक
त्रयोदशी	19.42	बुध	रेवती	20.05.20	मेष	प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि, भद्रा 19. 42 से
चतुर्दशी	21.26	गुरु	अश्विनी	21.05.20	मेष	भद्रा 08.39 तक
अमावस्या	23.08	शुक्र	भरणी	22.05.20	वृष 07.36	देवपितृकार्ये वटसावित्री व्रत, शनि जयन्ती, संत ज्ञानेश्वर जयन्ती

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त
प्रतिपदा	08.05.2020	05.59	19.09
अष्टमी	15.05.2020	05.55	19.13
अमावस्या	22.05.2020	05.52	19.17

वार	समय	राहुकाल	बुध दिवा
रवि	सायं	४।३० से ६।०	गुरु दिवा १।३० से ३।०
सोम	प्रातः	७।३० से ९।०	शुक्र प्रातः १०।३० से १२।०
मंगल	दिवा	३।० से ४।३०	शनि प्रातः ६।० से १०।३०

॥ श्री मन्महागणाधिपतये नमः ॥

॥ श्री श्रीजी महाराज की जय ॥



॥ श्री गोपाल जी महाराज की जय ॥

॥ श्री गुरुजी महाराज की जय ॥

॥ श्री बाबा महाराज की जय ॥

वि० सं० 2077

शाके 1942

ईस्वी सन् 2020-21

ज्येष्ठ (शुक्रश्री) शुक्ल पक्ष

ग्रीष्म ऋतु

सूर्य उत्तरायने-उत्तरगोले

तिथि	समाप्ति घं०मि०	वार	नक्षत्र	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	24.17	शनि	रोहिणी	23.05.20	वृष	करवीर व्रत, सर्वार्थ-अमृत सिद्धि योग 05.52 से 28.51 तक
द्वितीया	25.00	रवि	मृगशिरा	24.05.20	मिथुन 17.33	रोहिणी तपन काल प्रारंभ, मिथुन में बुध 23.57
तृतीया	25.18	सोम	मृगशिरा	25.05.20	मिथुन	सर्वार्थ-अमृत सिद्धि योग 05.51 से 06.09, रम्भा तृतीया, श्री महाराणा प्रताप जयन्ती
चतुर्थी	25.08	मंगल	आर्द्रा	26.05.20	कर्क 25.23	भद्रा 13.13 से 25.08 तक
पंचमी	24.31	बुध	पुनर्वसु	27.05.20	कर्क	
षष्ठी	23.27	गुरु	पुष्य	28.05.20	कर्क	अरण्य षष्ठी, विन्ध्यवासिनी पूजा, सर्वार्थ-अमृत सिद्धि-गुरुपुष्य योग 05.50 से 07.26 तक
सप्तमी	21.55	शुक्र	अश्लेषा	29.05.20	सिंह 06.57	भद्रा 21.55 से
अष्टमी	19.57	शनि	मघा	30.05.20	सिंह	श्री धूमावती महाविद्या जयन्ती, भद्रा 08.56 तक
नवमी	17.36	रवि	उत्तरा फा०	31.05.20	कन्या 10.18	महेश नवमी, सर्वार्थ सिद्धि योग 05.50 से 29.50 तक, अमृत सिद्धि योग 27.00 से 29.50 तक
दशमी	14.57	सोम	हस्त	01.06.20	कन्या	भद्रा 25.31 से, श्री गंगा दशहरा, श्री बटुक भैरव जयन्ती
एकादशी	12.04	मंगल	चित्रा	02.06.20	तुला 11.59	निर्जला एकादशी व्रत, भद्रा 12.04 तक
द्वादशी	09.05	बुध	स्वाति	03.06.20	तुला	प्रदोष व्रत, वटसावित्री व्रतारम्भ
त्रयोदशी	06.06	गुरु	विशाखा	04.06.20	वृश्चिक 13.06	भद्रा 27.15 तक से, सर्वार्थ सिद्धि योग 18.36 से
चतुर्दशी	27.15	गुरु	—	—	—	चतुर्दशी क्षय
पूर्णिमा	24.41	शुक्र	अनुराधा	05.06.20	वृश्चिक	वटसावित्री व्रत पूर्ण, पूर्णिमा व्रत, भद्रा 13.58 से 16.42 तक, सत्यव्रत, श्री कबीर जयन्ती

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त
प्रतिपदा	23.05.2020	05.52	19.18
अष्टमी	31.05.2020	05.50	19.22
पूर्णिमा	05.06.2020	05.49	19.24

वार	समय	राहुकाल	बुध दिवा
रवि	सायं ४।३० से ६।०	गुरु दिवा १।३० से ३।०	
सोम	प्रातः ७।३० से ९।०	शुक्र प्रातः १०।३० से १२।०	
मंगल	दिवा ३।० से ४।३०	शनि प्रातः ६।० से १०।३०	

॥ श्री मन्महागणाधिपतये नमः॥

॥ श्री श्रीजी महाराज की जय॥



॥ श्री गोपाल जी महाराज की जय॥

॥ श्री गुरुजी महाराज की जय॥

॥ श्री बाबा महाराज की जय॥

वि०सं० 2077

शाके 1942

ईस्वी सन् 2020-21

आषाढ़ (शुचिश्री) कृष्णपक्ष

ग्रीष्म-वर्षा ऋतु सूर्य उत्तर-दक्षिणायने-उत्तरगोले

तिथि	समाप्ति घं०मि०	वार	नक्षत्र	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	22.32	शनि	ज्येष्ठा	06.06.20	धनु 15.11	
द्वितीया	20.55	रवि	मूल	07.06.20	धनु	सर्वार्थ सिद्धि योग 05 .49 से 14 .10 तक
तृतीया	19.56	सोम	पूर्वाषाढ़ा	08.06.20	मकर 19.44	आषाढ़ी चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय रात्रि 22.17, भद्रा 08.26 से 19.56 तक
चतुर्थी	19.38	मंगल	उत्तराषाढ़ा	09.06.20	मकर	
पंचमी	20.04	बुध	श्रवण	10.06.20	कुंभ 27.41	पंचक प्रारम्भ 27.41 से
षष्ठी	21.10	गुरु	धनिष्ठा	11.06.20	कुंभ	भद्रा 21.10 से
सप्तमी	22.52	शुक्र	शतभिषा	12.06.20	कुंभ	भद्रा 10.01 तक
अष्टमी	24.59	शनि	पूर्वा भाद्रपदी	13.06.20	मीन 14.45	
नवमी	27.11	रवि	उत्तरा भाद्रपदी	14.06.20	मीन	मिथुन संक्रान्ति (षडशीतिमुखा संज्ञक) 23 .52, सर्वार्थ सिद्धि योग 05.49 से 24.21
दशमी	29.40	सोम	रेवती	15.06.20	मेष 27.16	पंचक 27.16 तक, भद्रा 16.29 से 29.40 तक
एकादशी	सर्वेषाम	मंगल	अश्विनी	16.06.20	मेष	सर्वार्थ-अमृत सिद्धि योग 05 .49 से 29.49
एकादशी	05.03	बुध	अश्विनी	17.06.20	मेष	योगिनी एकादशी व्रत
द्वादशी	09.39	गुरु	भरणी	18.06.20	वृष 15.02	प्रदोष व्रत, रानी झांसी जयन्ती, मीन में मंगल 20.13
त्रयोदशी	11.01	शुक्र	कृतिका	19.06.20	वृष	भद्रा 11.01 से 23.27, मास शिवरात्रि
चतुर्दशी	11.52	शनि	रोहिणी	20.06.20	मिथुन 24.34	पितृकार्य अमावस्या, सर्वार्थ-अमृत सिद्धि योग 05.50 से 12 .01 तक, रवि दक्षिणायन प्रारंभ, वर्षा ऋतु प्रारंभ
अमावस्या	12.11	रवि	मृगशिरा	21.06.20	मिथुन	देवकार्य अमावस्या, विश्व योग दिवस

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त
प्रतिपदा	06.06.2020	05.49	19.24
अष्टमी	13.06.2020	05.49	19.27
अमावस्या	21.06.2020	0550	19.29

वार	समय	राहुकाल	बुध दिवा
रवि	सायं ४।३० से ६।०	गुरु दिवा १।३० से ३।०	
सोम	प्रातः ७।३० से ९।०	शुक्र प्रातः १०।३० से १२।०	
मंगल	दिवा ३।० से ४।३०	शनि प्रातः ६।० से १०।३०	

॥ श्री मन्महागणाधिपतये नमः ॥

॥ श्री श्रीजी महाराज की जय ॥



॥ श्री गोपाल जी महाराज की जय ॥

॥ श्री गुरुजी महाराज की जय ॥

॥ श्री बाबा महाराज की जय ॥

वि०सं० 2077

शाके 1942

ईस्वी सन् 2020-21

आषाढ़ (शुचिश्री) शुक्ल पक्ष

वर्षा ऋतु

सूर्य दक्षिणायने-उत्तरगोले

तिथि	समाप्ति घं०मि०	वार	नक्षत्र	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	11.59	सोम	आर्द्रा	22.06.20	मिथुन	गुप्त नवरात्र विधान प्रारंभ, देवीपर्व, श्रीपीठ, श्रीजी मंदिर, श्रीधाम मथुरा, चन्द्रदर्शन
द्वितीया	11.19	मंगल	पुनर्वसु	23.06.20	कर्क 07.34	श्री जगन्नाथ रथयात्रा
तृतीया	10.14	बुध	पुष्य	24.06.20	कर्क	भद्रा 21.31 से
चतुर्थी	08.47	गुरु	अश्लेषा	25.06.20	सिंह 12.26	भद्रा 08.47 तक
पंचमी	07.02	शुक्र	मघा	26.06.20	सिंह	श्री स्कन्दकुमार षष्ठी
षष्ठी	29.03	शुक्र	—	—	—	षष्ठी क्षय
सप्तमी	26.53	शनि	पूर्वा फा०	27.06.20	कन्या 15.50	श्री विवस्वत सप्तमी, भद्रा 29.24 से
अष्टमी	24.35	रवि	उत्तरा फा०	28.06.20	कन्या	श्री पार्वती जयन्ती, भद्रा 13.44 तक, सर्वार्थ-सिद्धि योग 05.52 से 29.52 तक, अमृत-सिद्धि योग 08.45 से 29.52 तक
नवमी	22.12	सोम	हस्त	29.06.20	तुला 18.26	भडली नवमी, अबूझ मुहूर्त दिवस, गुप्त नवरात्रि पूर्ण, धनु में गुरु 29.27
दशमी	19.49	मंगल	चित्रा	30.06.20	तुला	रथवापिसी (पुरी)
एकादशी	17.29	बुध	स्वाति	01.07.20	वृश्चिक 20.55	देवशयनी एकादशी व्रत, विष्णुशयनोत्सव, भद्रा 06.39 से 17.29 तक, सर्वार्थ सिद्धि योग 26.33 से, अमृतसिद्धि योग 26.33 से 29.53
द्वादशी	15.16	गुरु	विशाखा	02.07.20	वृश्चिक	सर्वार्थ-सिद्धि योग 25.13 तक, प्रदोष व्रत
त्रयोदशी	13.16	शुक्र	अनुराधा	03.07.20	धनु 24.07	
चतुर्दशी	11.33	शनि	ज्येष्ठा	04.07.20	धनु	पूर्णिमाव्रत, कोकिला व्रत, शिवशयनोत्सव, भद्रा 11.33 से 22.53
पूर्णिमा	10.13	रवि	मूल	05.07.20	मकर 29.00	श्री गुरुपूर्णिमा, व्यासपीठ पूजा, श्री दक्षिणामूर्ति जयन्ती, आनन्दोत्सव-श्रीपीठ, श्रीजी दरबार, श्री गुरुपादुकार्चन, परिक्रमा गोवर्धन, चातुर्मास्य प्रारंभ

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त
प्रतिपदा	22.06.2020	05.50	19.29
अष्टमी	28.06.2020	05.52	19.30
पूर्णिमा	05.07.2020	05.54	19.30

वार	समय	राहुकाल	बुध	दिवा
रवि	सायं	४।३० से ६।०	गुरु	दिवा १।३० से ३।०
सोम	प्रातः	७।३० से ९।०	शुक्र	प्रातः १०।३० से १२।०
मंगल	दिवा	३।० से ४।३०	शनि	प्रातः ६।० से १०।३०

॥ श्री मन्महागणाधिपतये नमः॥

॥ श्री श्रीजी महाराज की जय॥

॥ श्री गुरुजी महाराज की जय॥



॥ श्री गोपाल जी महाराज की जय॥

॥ श्री बाबा महाराज की जय॥

वि०सं० 2077

श्रावण (नभश्री) कृष्ण पक्ष

शाके 1942

वर्षा ऋतु

ईस्वी सन् 2020-21

सूर्य दक्षिणायन-उत्तरगोले

तिथि	समाप्ति घं०मि०	वार	नक्षत्र	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	09.22	सोम	उत्तराषाढ़ा	06.07.20	मकर	अशून्य व्रत प्रारम्भ, सर्वार्थ सिद्धि योग 23.11 से 29.55, श्रावण सोमवार व्रत
द्वितीया	09.02	मंगल	श्रवण	07.07.20	मकर	भद्रा 21.10 से, फलद्वितीया
तृतीया	09.18	बुध	धनिष्ठा	08.07.20	कुंभ 12.30	पंचक प्रारम्भ 12.30 से, भद्रा 09.18 तक, चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय रात्रि 22.17
चतुर्थी	10.11	गुरु	शतभिषा	09.07.20	कुंभ	
पंचमी	11.37	शुक्र	पूर्वा भाद्रपदी	10.07.20	मीन 22.54	नागपंचमी
षष्ठी	13.33	शनि	उत्तरा भाद्रपदी	11.07.20	मीन	भद्रा 13.33 से 26.40
सप्तमी	15.47	रवि	उत्तरा भाद्रपदी	12.07.20	मीन	सर्वार्थ सिद्धि योग 05.57 से 08.17 तक
अष्टमी	18.09	सोम	रेवती	13.07.20	मेष 11.13	कालाष्टमी व्रत, पंचक समाप्त 11.13 श्रावण सोमवार व्रत
नवमी	20.24	मंगल	अश्विनी	14.07.20	मेष	सर्वार्थ-अमृत सिद्धि योग 05.58 से 14.06 तक
दशमी	22.19	बुध	भरणी	15.07.20	वृष 23.18	भद्रा 09.22 से 22.19 तक, सर्वार्थ सिद्धि योग 16.42 से 29.59 तक
एकादशी	23.44	गुरु	कृतिका	16.07.20	वृष	कामदा एकादशी व्रत, कर्क संक्रान्ति (याम्यायन संज्ञक) 10.46
द्वादशी	24.33	शुक्र	रोहिणी	17.07.20	वृष	
त्रयोदशी	24.41	शनि	मृगशिरा	18.07.20	मिथुन 09.00	शनि प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि, भद्रा 24.41 से
चतुर्दशी	24.09	रवि	आर्द्रा	19.07.20	मिथुन	भद्रा 12.26 तक
अमावस्या	23.02	सोम	पुनर्वसु	20.07.20	कर्क 15.58	देव-पितृकार्य-सोमवती-हरियाली अमावस्या, सर्वार्थ-अमृत सिद्धि योग 21.20 से 30.02 तक, श्रावण सोमवार व्रत

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त
प्रतिपदा	06.07.2020	05.55	19.30
अष्टमी	13.07.2020	05.58	19.29
अमावस्या	20.07.2020	06.01	19.27

वार	समय	राहुकाल	बुध दिवा
रवि	सायं	४।३० से ६।०	गुरु दिवा १।३० से ३।०
सोम	प्रातः	७।३० से ६।०	शुक्र प्रातः १०।३० से १२।०
मंगल	दिवा	३।० से ४।३०	शनि प्रातः ६।० से १०।३०

॥ श्री मन्महागणाधिपतये नमः ॥

॥ श्री श्रीजी महाराज की जय ॥



॥ श्री गोपाल जी महाराज की जय ॥

॥ श्री गुरुजी महाराज की जय ॥

॥ श्री बाबा महाराज की जय ॥

वि०सं० 2077

शाके 1942

ईस्वी सन् 2020-21

श्रावण (नभश्री) शुक्ल पक्ष

वर्षा ऋतु

सूर्य दक्षिणायने-उत्तरगोले

तिथि	समाप्ति घं०मि०	वार	नक्षत्र	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	21.44	मंगल	पुष्य	21.07.20	कर्क	सर्वार्थ सिद्धि योग 20.29 से 30.02, नक्त व्रतारम्भ
द्वितीया	19.22	बुध	अश्लेषा	22.07.20	सिंह 19.15	चन्द्रदर्शन, स्वामी करपात्री जी जन्मदिवस
तृतीया	17.03	गुरु	मघा	23.07.20	सिंह	मधुश्रवा तीज, हरियाली तीज, झूला तीज, स्वर्ण गौरी व्रत
चतुर्थी	14.34	शुक्र	पूर्वा फा०	24.07.20	कन्या 21.26	विनायक दूर्वा चतुर्थी व्रत, भद्रा 07.09 से
पंचमी	12.02	शनि	उत्तरा फा०	25.07.20	कन्या	नागपंचमी देशाचारीय, श्री कल्कि जयन्ती
षष्ठी	09.32	रवि	हस्त	26.07.20	तुला 23.48	वर्णषष्ठी, सर्वार्थ-अमृत सिद्धि योग 06.04 से 18.03 तक
सप्तमी	07.09	सोम	चित्रा	27.07.20	तुला	गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती, भद्रा 07.09 से 18.03, शील सप्तमी, श्रावण सोमवार व्रत
अष्टमी	28.57	—	—	—	—	अष्टमी क्षय
नवमी	26.59	मंगल	स्वाति	28.07.20	वृश्चिक 26.48	
दशमी	25.16	बुध	विशाखा	29.07.20	वृश्चिक	सर्वार्थ सिद्धि योग 08.32 से, अमृत सिद्धि योग 08.32 से 30.06
एकादशी	23.49	गुरु	अनुराधा	30.07.20	वृश्चिक	भद्रा 12.33 से 23.49 तक, सर्वार्थ सिद्धि योग 07.40 तक
द्वादशी	22.42	शुक्र	ज्येष्ठा	31.07.20	धनु 07.04	विष्णुपवित्रार्पण, मिथुन में शुक्र 29.08
त्रयोदशी	21.54	शनि	मूल	01.08.20	धनु	शनि प्रदोष व्रत, कर्क में बुध 27.30
चतुर्दशी	21.28	रवि	पूर्वाषाढा	02.08.20	मकर 12.56	पूर्णिमा व्रत, भद्रा 21.28 से
पूर्णिमा	21.28	सोम	उत्तराषाढा	03.08.20	मकर	पूर्णिमा पुण्यकाल, रक्षाबन्धन भद्रोपरान्त, श्री गायत्री जयन्ती, कोकिलाव्रत पूर्ण, अमरनाथ यात्रा पूर्ण, श्रावण सोमवार व्रत, भद्रा 09.28 तक

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त
प्रतिपदा	21.07.2020	06.02	19.26
अष्टमी	28.07.2020	06.05	19.23
पूर्णिमा	03.08.2020	06.08	19.20

वार	समय	राहुकाल	बुध दिवा
रवि	सायं	४।३० से ६।०	गुरु दिवा १।३० से ३।०
सोम	प्रातः	७।३० से ९।०	शुक्र प्रातः १०।३० से १२।०
मंगल	दिवा	३।० से ४।३०	शनि प्रातः ६।० से १०।३०

॥ श्री मन्महागणाधिपतये नमः॥

॥ श्री श्रीजी महाराज की जय॥



॥ श्री गोपाल जी महाराज की जय॥

॥ श्री गुरुजी महाराज की जय॥

॥ श्री बाबा महाराज की जय॥

वि०सं० 2077

शाके 1942

ईस्वी सन् 2020-21

भाद्रपद (नभस्याश्री) कृष्ण पक्ष

वर्षा ऋतु

सूर्य दक्षिणायने-उत्तरगोले

तिथि	समाप्ति घं०मि०	वार	नक्षत्र	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	21.54	मंगल	श्रवण	04.08.20	कुंभ 20.46	पंचक प्रारंभ 20.46 से
द्वितीया	22.50	बुध	धनिष्ठा	05.08.20	कुंभ	अशून्य शयन व्रत पूर्ण, भीमचण्डी, विन्ध्या जयन्ती
तृतीया	24.14	गुरु	शतभिषा	06.08.20	कुंभ	कज्जली तृतीया, चन्द्रोदय रात्रि 21.23 भद्रा 11.33 से 24.14 तक
चतुर्थी	26.06	शुक्र	पूर्वा भाद्रपदी	07.08.20	मीन 07.56	बहुला चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय रात्रि 21.54, (गोरक्षा संकल्प दिवस)
पंचमी	28.18	शनि	उत्तरा भाद्रपदी	08.08.20	मीन	रक्षापंचमी
षष्ठी	अहोरात्र	रवि	रेवती	09.08.20	मेष 19.05	हलचंदन षष्ठी व्रत, चन्द्रोदय रात्रि 22.55 पंचक समाप्त 19.05
षष्ठी	06.42	सोम	अश्विनी	10.08.20	मेष	भद्रा 06.42 से 19.54 तक
सप्तमी	09.06	मंगल	भरणी	11.08.20	मेष	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, महाआरती निशीथपूजनम्, श्रीपीठ श्रीजीमंदिर, श्रीधाम, मथुरा, कृष्ण जन्म मथुराश्री आद्याकाली जयन्ती, सर्वार्थ सिद्धि योग 24.56 से
अष्टमी	11.16	बुध	कृतिका	12.08.20	वृष 07.36	श्री कृष्ण जन्माष्टमी उत्सव, सर्वार्थ सिद्धि योग 30.13 तक
नवमी	12.58	गुरु	रोहिणी	13.08.20	वृष	नन्दोत्सव गोकुल-नन्दगांव, श्रीधाम मथुरा, भद्रा 25.59 से
दशमी	14.01	शुक्र	मृगशिरा	14.08.20	मिथुन 18.04	भद्रा 14.01 तक
एकादशी	14.20	शनि	मृगशिरा	15.08.20	मिथुन	अजा एकादशी व्रत, 74वां स्वतंत्रता दिवस
द्वादशी	13.50	रवि	आर्द्रा	16.08.20	कर्क 24.52	सिंह संक्रान्ति (विष्णुपदी संज्ञक) 19.10 प्रदोषव्रत
त्रयोदशी	12.35	सोम	पुनर्वसु	17.08.20	कर्क	मास शिवरात्रि व्रत, भद्रा 12.35 से 23.37 तक, सर्वार्थ सिद्धि योग 06.43 से 29.43, सिंह में बुध 08.28
चतुर्दशी	10.39	मंगल	आश्लेषा	18.08.20	सिंह 28.07	अघोरा चौदस, पितृकार्य अमावस्या, कुशोत्पाटिनी अमावस्या 'ऊँ हूँ फट् स्वाहा', सर्वार्थ सिद्धि योग 06.15 से 28.07 तक
अमावस्या	08.11	बुध	मघा	19.08.20	सिंह	देवकार्य अमावस्या, नक्तव्रत पूर्ण

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त
प्रतिपदा	04.08.2020	06.09	19.19
अष्टमी	12.08.2020	06.13	19.13
अमावस्या	19.08.2020	06.16	19.07

वार	समय	राहुकाल	बुध	दिवा
रवि	सायं	४।३० से ६।०	गुरु	दिवा १।३० से १।३०
सोम	प्रातः	७।३० से ६।०	शुक्र	प्रातः १०।३० से १२।०
मंगल	दिवा	३।० से ४।३०	शनि	प्रातः ६।० से १०।३०

॥ श्री मन्महागणाधिपतये नमः ॥

॥ श्री श्रीजी महाराज की जय ॥
॥ श्री गुरुजी महाराज की जय ॥



॥ श्री गोपाल जी महाराज की जय ॥
॥ श्री बाबा महाराज की जय ॥

वि०सं० 2077

शाके 1942

ईस्वी सन् 2020-21

भाद्रपद (नभस्याश्री) शुक्ल पक्ष

वर्षा-शरद ऋतु

सूर्य दक्षिणायने-उत्तरगोले

तिथि	समाप्ति घं०मि०	वार	नक्षत्र	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	29.19	बुध	—	—	—	प्रतिपदा क्षय
द्वितीया	26.13	गुरु	पूर्वा फा०	20.08.20	कन्या 29.14	चन्द्रदर्शन
तृतीया	23.02	शुक्र	उत्तरा फा०	21.08.20	कन्या	हरितालिका तीज
चतुर्थी	19.47	शनि	हस्त	22.08.20	तुला 30.06	श्री गणेश जयन्ती, चतुर्थी व्रत, भद्रा 09.30 से 19.57 तक
पंचमी	17.04	रवि	चित्रा	23.08.20	तुला	ऋषिपंचमी व्रत
षष्ठी	14.31	सोम	स्वाति	24.08.20	तुला	श्री बलदेव षष्ठी, सूर्यषष्ठी, मुक्ताभरण संतान सप्तमी
सप्तमी	12.21	मंगल	विशाखा	25.08.20	वृश्चिक 08.16	भद्रा 12.21 से 23.30, श्री राधाष्टमी
अष्टमी	10.39	बुध	अनुराधा	26.08.20	वृश्चिक	श्री दधीचि जयन्ती, श्री महालक्ष्मी व्रतारम्भ, सर्वार्थ-अमृत सिद्धि योग 06.19 से 13.03 तक,
नवमी	09.24	गुरु	ज्येष्ठा	27.08.20	धनु 12.36	श्रीचन्द्र नवमी, अदुःख नवमी
दशमी	08.38	शुक्र	मूल	28.08.20	धनु	श्री महालक्ष्मी व्रत पूर्ण, भद्रा 20.28 से
एकादशी	08.17	शनि	पूर्वाषाढ़ा	29.08.20	मकर 19.12	पद्मा एकादशी व्रत, जलझूलनी एकादशी, भद्रा 08.17 तक
द्वादशी	08.21	रवि	उत्तराषाढ़ा	30.08.20	मकर	श्री वामन जयन्ती, श्री देवी भुवनेश्वरी महाविद्या जयन्ती, प्रदोष व्रत
त्रयोदशी	08.48	सोम	श्रवण	31.08.20	कुंभ 27.47	सर्वार्थ सिद्धि योग 06.21 से 15.03 तक, कर्क में शुक्र 26.02, पंचक प्रारम्भ 27.47
चतुर्दशी	09.38	मंगल	धनिष्ठा	01.09.20	कुंभ	अनन्त चतुर्दशी, पूर्णिमाव्रत, महालय श्राद्धपक्षारम्भ, पूर्णिमा श्राद्ध
पूर्णिमा	10.51	बुध	शतभिषा	02.09.20	कुंभ	पूर्णिमा पुण्यकाल, प्रतिपदा श्राद्ध, कन्या में बुध 12.03

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त
द्वितीया	20.08.2020	06.16	19.06
अष्टमी	26.08.2020	06.19	19.00
पूर्णिमा	02.09.2020	06.22	18.53

वार	समय	राहुकाल	बुध दिवा
रवि	सायं	४।३० से ६।०	गुरु दिवा १।३० से १।३०
सोम	प्रातः	७।३० से ६।०	शुक्र प्रातः १०।३० से १२।०
मंगल	दिवा	३।० से ४।३०	शनि प्रातः ६।० से १०।३०

॥ श्री मन्महागणाधिपतये नमः ॥

॥ श्री श्रीजी महाराज की जय ॥

॥ श्री गुरुजी महाराज की जय ॥

वि० सं० 2077

प्रथम आश्विन (इषश्री) कृष्णपक्ष



॥ श्री गोपाल जी महाराज की जय ॥

॥ श्री बाबा महाराज की जय ॥

शाके 1942

शरद ऋतु

ईस्वी सन् 2020-21

सूर्य दक्षिणायने-उत्तरगोले

तिथि	समाप्ति घं०मि०	वार	नक्षत्र	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	12.26	गुरु	पूर्वा भाद्रपदी	03.09.20	मीन 14.14	द्वितीया श्राद्ध
द्वितीया	14.23	शुक्र	उत्तरा भाद्रपदी	04.09.20	मीन	भद्रा 27.31 से, सर्वार्थ सिद्धि-अमृत सिद्धि योग 23.27 से 30.30 तक
तृतीया	16.38	शनि	रेवती	05.09.20	मेष 26.20	तृतीया श्राद्ध, चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय रात्रि 20.56, पंचक समाप्त 26.20, शिक्षक दिवस
चतुर्थी	19.06	रवि	अश्विनी	06.09.20	मेष	चतुर्थी श्राद्ध, सर्वार्थ सिद्धि योग 06.24 से 29.23
पंचमी	21.38	सोम	भरणी	07.09.20	मेष	पंचमी श्राद्ध
षष्ठी	24.02	मंगल	भरणी	08.09.20	वृष 15.09	षष्ठी श्राद्ध, भद्रा 24.02 से
सप्तमी	26.05	बुध	कृतिका	09.09.20	वृष	सप्तमी श्राद्ध, भद्रा 13.04 तक, सर्वार्थ सिद्धि योग 30.25 से
अष्टमी	27.34	गुरु	रोहिणी	10.09.20	मिथुन 26.36	अष्टमी श्राद्ध, अशोकाष्टमी, जीवित्पुत्रिकाव्रतं
नवमी	28.19	शुक्र	मृगशिरा	11.09.20	मिथुन	नवमी श्राद्ध,
दशमी	28.14	शनि	आर्द्रा	12.09.20	मिथुन	दशमी श्राद्ध, भद्रा 16.17 से 28.14
एकादशी	27.16	रवि	पुनर्वसु	13.09.20	कर्क 10.35	इन्दिरा एकादशी व्रत, एकादशी श्राद्ध, सर्वार्थ सिद्धि योग 16.33 से 30.27 तक, हिन्दी दिवस
द्वादशी	25.29	सोम	पुष्य	14.09.20	कर्क	द्वादशी श्राद्ध, सर्वार्थ सिद्धि योग 06.27 से 15.51
त्रयोदशी	23.00	मंगल	आश्लेषा	15.09.20	सिंह	त्रयोदशी श्राद्ध, भद्रा 23.00 से, भौम प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि, सर्वार्थ सिद्धि योग 06.27 से 14.24
चतुर्दशी	19.56	बुध	मघा	16.09.20	सिंह	चतुर्दशी श्राद्ध, कन्या में सूर्य (षडशीतिमुखा संज्ञक) 19.06
अमावस्या	16.29	गुरु	पूर्वा फा०	17.09.20	कन्या	देवपितृकार्य अमावस्या, श्राद्धपक्ष पूर्ण, विश्वकर्मा पूजा

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त
प्रतिपदा	03.09.2020	06.22	18.52
अष्टमी	10.09.2020	06.25	18.44
अमावस्या	17.09.2020	08.28	18.36

वार	समय	राहुकाल	बुध	दिवा
रवि	सायं	४।३० से ६।०	गुरु	दिवा १।३० से १।३०
सोम	प्रातः	७।३० से ६।०	शुक्र	प्रातः १०।३० से १२।०
मंगल	दिवा	३।० से ४।३०	शनि	प्रातः ६।० से १०।३०

॥ श्री मन्महागणाधिपतये नमः ॥

॥ श्री श्रीजी महाराज की जय ॥



॥ श्री गोपाल जी महाराज की जय ॥

॥ श्री गुरुजी महाराज की जय ॥

॥ श्री बाबा महाराज की जय ॥

वि०सं० 2077

शाके 1942

ईस्वी सन् 2020-21

प्रथम आश्विन (इषश्री) शुक्लपक्ष शरद ऋतु

सूर्य दक्षिणायने-उत्तर-दक्षिणगोले

तिथि	समाप्ति घं०मि०	वार	नक्षत्र	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	12.50	शुक्र	उ० फाल्गुनी	18.09.20	कन्या	चन्द्रदर्शन, पुरुषोत्तम मास प्रारंभ
द्वितीया	09.10	शनि	चित्रा	19.09.20	तुला 14.41	सर्वार्थ सिद्धि योग 25.19 से 30.29 तक
तृतीया	29.38	शनि	—	—	—	तृतीया क्षय
चतुर्थी	26.26	रवि	स्वाती	20.09.20	तुला	भद्रा 16.02 से 26.26
पंचमी	23.42	सोम	विशाखा	21.09.20	वृश्चिक 15.16	सर्वार्थ सिद्धि योग 20.48 से 30.30
षष्ठी	21.30	मंगल	अनुराधा	22.09.20	वृश्चिक	रवि दक्षिण गोलीय गति प्रारंभ 18.59, तुला में बुध 16.56
सप्तमी	19.56	बुध	ज्येष्ठा	23.09.20	धनु 18.24	भद्रा 19.16 से, वृष में राहु, वृश्चिक में केतु 08.28
अष्टमी	19.01	गुरु	मूल	24.09.20	धनु	भद्रा 07.29 तक
नवमी	18.43	शुक्र	पूर्वाषाढा	25.09.20	मकर 24.41	
दशमी	18.59	शनि	उत्तराषाढा	26.09.20	मकर	सर्वार्थ सिद्धि योग 19.25 से 30.32 तक
एकादशी	19.46	रवि	श्रवण	27.09.20	मकर	भद्रा 07.22 से 19.46 तक, सिंह में शुक्र 25.01, पुरुषोत्तम एकादशी व्रत
द्वादशी	20.58	सोम	धनिष्ठा	28.09.20	कुंभ 09.40	पंचक प्रारंभ 09.40 से
त्रयोदशी	22.33	मंगल	शतभिषा	29.09.20	कुंभ	भौम प्रदोष व्रत
चतुर्दशी	24.25	बुध	पूर्वा भाद्रपदी	30.09.20	मीन 20.36	भद्रा 24.25 से
पूर्णिमा	26.34	गुरु	उत्तरा भाद्रपदी	01.10.20	मीन	भद्रा 13.30 तक, सर्वार्थ सिद्धि योग 29.56 से, पूर्णिमा व्रत

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त
प्रतिपदा	18.09.2020	06.28	18.35
अष्टमी	24.09.2020	06.31	18.29
पूर्णिमा	01.10.2020	06.34	18.21

वार	समय	राहुकाल	बुध	दिवा
रवि	सायं	४।३० से ६।०	गुरु	दिवा १।३० से १।३०
सोम	प्रातः	७।३० से ६।०	शुक्र	प्रातः १०।३० से १२।०
मंगल	दिवा	३।० से ४।३०	शनि	प्रातः ६।० से १०।३०

॥ श्री मन्महागणाधिपतये नमः ॥

॥ श्री श्रीजी महाराज की जय ॥

॥ श्री गुरुजी महाराज की जय ॥



॥ श्री गोपाल जी महाराज की जय ॥

॥ श्री बाबा महाराज की जय ॥

वि०सं० 2077

शाके 1942

ईस्वी सन् 2020-21

द्वितीय आश्विन (इषश्री) कृष्णपक्ष

शरद ऋतु

सूर्य दक्षिणायन-दक्षिणगोले

तिथि	समाप्ति घं०मि०	वार	नक्षत्र	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	28.56	शुक्र	रेवती	02.10.20	मीन	सर्वार्थ सिद्धि योग 30.35 तक, अमृत सिद्धियोग 06.34 से 30.35 तक, महात्मा गांधी जयन्ती, लालबहादुर शास्त्री जयन्ती
द्वितीया	सर्वेषाम	शनि	रेवती	03.10.20	मेष 05.50	पंचक 08.50 तक
द्वितीया	02.10	रवि	अश्विनी	04.10.20	मेष	भद्रा 20.44 से, सर्वार्थ सिद्धि योग 06.35 से 11.51 तक
तृतीया	08.34	सोम	भरणी	05.10.20	वृष 21.41	भद्रा 10.02 तक, चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय रात्रि 20.31
चतुर्थी	14.48	मंगल	कृतिका	06.10.20	वृष	सर्वार्थ सिद्धि योग 06.36 से 17.53 तक
पंचमी	20.28	बुध	रोहिणी	07.10.20	वृष	सर्वार्थ सिद्धि योग 06.36 से 29.13 तक
षष्ठी	24.58	गुरु	मृगशिरा	08.10.20	मिथुन 09.46	भद्रा 16.36 से 29.53 तक
सप्तमी	28.00	शुक्र	आर्द्रा	09.10.20	मिथुन	सर्वार्थ सिद्धि योग 24.26 से 30.38 तक
अष्टमी	29.05	शनि	पुनर्वसु	10.10.20	कर्क 19.09	
नवमी	28.08	रवि	पुष्य	11.10.20	कर्क	भद्रा 29.15 से, रविपुष्य योग 06.38 से 25.18 तक
दशमी	24.58	सोम	आश्लेषा	12.10.20	सिंह 24.29	भद्रा 16.38 तक
एकादशी	19.50	मंगल	मघा	13.10.20	सिंह	पुरुषोत्तम मास एकादशी व्रत
द्वादशी	12.58	बुध	पूर्वा फा०	14.10.20	कन्या 26.01	प्रदोषव्रत
त्रयोदशी	04.43	गुरु	उत्तरा फाल्गुनी	15.10.20	कन्या	भद्रा 08.33 से 16.43 तक, मास शिवरात्रि
चतुर्दशी	28.52	—	—	—	—	चतुर्दशी क्षय
पूर्णिमा	25.00	शुक्र	हस्त	16.10.20	तुला 25.24	देवपितृकार्ये अमावस्या, पुरुषोत्तम मास विधान पूर्ण

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त	वार समय राहुकाल
प्रतिपदा	02.10.2020	06.34	18.20	बुध दिवा १२।० से १।३०
अष्टमी	10.10.2020	06.38	18.11	रवि सायं ४।३० से ६।० गुरु दिवा १।३० से ३।०
पूर्णिमा	16.10.2020	06.41	18.05	सोम प्रातः ७।३० से ६।० शुक्र प्रातः १०।३० से १२।०
				मंगल दिवा ३।० से ४।३० शनि प्रातः ६।० से १०।३०

॥ श्री मन्महागणाधिपतये नमः ॥

॥ श्री श्रीजी महाराज की जय ॥



॥ श्री गोपाल जी महाराज की जय ॥

॥ श्री गुरुजी महाराज की जय ॥

॥ श्री बाबा महाराज की जय ॥

वि०सं० 2077

शाके 1942

ईस्वी सन् 2020-21

द्वितीय आश्विन (इषश्री) शुक्लपक्ष शरद-हेमंत ऋतु सूर्य दक्षिणायने-दक्षिणगोले

तिथि	समाप्ति घं०मि०	वार	नक्षत्र	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	21.08	शनि	चित्रा	17.10.20	तुला	शारदीय नवरात्रि प्रारंभ, घटस्थापना श्रीपीठ श्रीजी मंदिर, श्रीधाम श्रीधाम, मथुरा, श्री अग्रसेन जयन्ती, सर्वार्थ सिद्धि योग 11.51 से 30.42, तुला में सूर्य (विषुव संज्ञक) 07.04
द्वितीया	17.27	रवि	स्वाती	18.10.20	वृश्चिक 24.46	चन्द्रदर्शन, द्वितीया पूजनम श्रीपीठ श्रीजी मंदिर, श्रीधाम श्रीधाम, मथुरा
तृतीया	14.07	सोम	अनुराधा	19.10.20	वृश्चिक	तृतीया पूजनम श्रीपीठ श्रीजी मंदिर, श्रीधाम श्रीधाम, मथुरा, भद्रा 24.43 से, सर्वार्थ सिद्धि योग 06.43 से 27.51 तक
चतुर्थी	11.18	मंगल	ज्येष्ठा	20.10.20	धनु 26.11	उपांग ललिता व्रत, चतुर्थी-पंचमी पूजनम श्रीपीठ श्रीजी मंदिर, श्रीधाम श्रीधाम, मथुरा, भद्रा 19.18 तक
पंचमी	09.07	बुध	मूल	21.10.20	धनु	सरस्वती आह्वान, पंचमी - षष्ठी पूजनम् श्रीपीठ श्रीजी मंदिर, श्रीधाम श्रीधाम, मथुरा
षष्ठी	07.39	गुरु	पूर्वाषाढ़ा	22.10.20	धनु	सरस्वती पूजनम्, सप्तमी पूजनम्, निशीथ पूजनम्, श्रीपीठ श्रीजी मंदिर, श्रीधाम, मथुरा, हेमंत ऋतु प्रारंभ 28.28
सप्तमी	06.56	शुक्र	उत्तराषाढ़ा	23.10.20	मकर 07.01	सरस्वती बलिदान, श्री दुर्गाष्टमी पूजनम्, श्रीपीठ श्रीजी मंदिर, श्रीधाम, मथुरा, भद्रा 06.56 से 18.57 तक, कन्या में शुक्र 10.44
अष्टमी	06.58	शनि	श्रवण	24.10.20	मकर	सरस्वती विसर्जन, नवमी पूजनम्, श्रीपीठ, श्रीजी मंदिर, श्रीधाम, मथुरा, सर्वार्थ सिद्धि योग 26.37 तक
नवमी	07.41	रवि	धनिष्ठा	25.10.20	कुंभ 15.25	श्री विजयादशमी, शमीपूजा, श्री अपराजिता जयन्ती, पंचक 15.25 से
दशमी	09.00	सोम	शतभिषा	26.10.20	कुंभ	भद्रा 21.53 से
एकादशी	10.46	मंगल	पूर्वा भाद्रपदी	27.10.20	मीन 26.30	पापांकुशा एकादशी व्रत, भद्रा 10.46 तक
द्वादशी	12.54	बुध	पूर्वा भाद्रपदी	28.10.20	मीन	प्रदोष व्रत
त्रयोदशी	15.15	गुरु	उत्तरा भाद्रपदी	29.10.20	मीन	सर्वार्थ सिद्धि योग 11.59 से
चतुर्दशी	17.45	शुक्र	रेवती	30.10.20	मेष 14.56	भद्रा 17.57 से, सर्वार्थ सिद्धि योग 30.50 तक, अमृत सिद्धि योग 06.49 से 14.56 तक, पंचक समाप्त 14.56, पूर्णिमा व्रत, कोजागरी व्रत
पूर्णिमा	20.18	शनि	अश्विनी	31.10.20	मेष	शरद पूर्णिमा, कार्तिक स्नान प्रारंभ, वाल्मीकी ऋषि जयन्ती, पाराशर ऋषि जयन्ती (मतान्तर), भद्रा 07.02 तक, लक्ष्मी चन्द्रपूजा, रासपूर्णिमा, श्रीपीठ श्रीजी दरबार बड़ी हवेली, श्रीधाम, मथुरा, ब्रज परिक्रमारम्भ

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त
प्रतिपदा	17.10.2020	06.42	18.04
अष्टमी	24.10.2020	06.46	17.58
पूर्णिमा	31.10.2020	06.50	17.52

वार	समय राहुकाल	बुध दिवा
रवि	सायं ४:३० से ६:१०	गुरु दिवा १२:३० से १:३०
सोम	प्रातः ७:३० से ८:१०	शुक्र प्रातः १०:३० से १२:१०
मंगल	दिवा ३:१० से ४:३०	शनि प्रातः ६:१० से १०:३०

॥ श्री मन्महागणाधिपतये नमः ॥

॥ श्री श्रीजी महाराज की जय ॥

॥ श्री गुरुजी महाराज की जय ॥



॥ श्री गोपाल जी महाराज की जय ॥

॥ श्री बाबा महाराज की जय ॥

वि०सं० 2077

कार्तिक (ऊर्जश्री) कृष्णपक्ष

शाके 1942

हेमन्त ऋतु

ईस्वी सन् 2020-21

सूर्य दक्षिणायने-दक्षिणगोले

तिथि	समाप्ति घं०मि०	वार	नक्षत्र	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	22.49	रवि	भरणी	01.11.20	वृष 27.40	
द्वितीया	25.13	सोम	कृतिका	02.11.20	वृष	सर्वार्थ सिद्धि योग 23.49 से 30.52
तृतीया	27.24	मंगल	रोहिणी	03.11.20	वृष	भद्रा 14.19 से 27.24 तक
चतुर्थी	29.14	बुध	मृगशिरा	04.11.20	मिथुन 15.42	करवा चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय रात्रि 20.27, भद्रा सर्वार्थ सिद्धि योग 06.53 से 28.50
पंचमी	30.36	गुरु	आर्द्रा	05.11.20	मिथुन	सर्वार्थ सिद्धि योग 30.44 से
षष्ठी	सर्वेषाम	शुक्र	पुनर्वसु	06.11.20	कर्क 25.47	सर्वार्थ सिद्धि योग 30.55 तक
षष्ठी	07.23	शनि	पुनर्वसु	07.11.20	कर्क	भद्रा 07.23 से 19.26 तक
सप्तमी	07.29	रवि	पुष्य	08.11.20	कर्क	अहोई अष्टमी पूजा, कालाष्टमी, चन्द्रोदय 24.10, सर्वार्थ सिद्धि योग —रविपुष्य योग 06.55 से 08.44 तक
अष्टमी	30.50	रवि	—	—	—	अष्टमी क्षय
नवमी	29.27	सोम	अश्लेषा	09.11.20	सिंह 08.41	
दशमी	27.22	मंगल	मघा	10.11.20	सिंह	भद्रा 16.25 से 17.22 तक
एकादशी	24.40	बुध	पूर्वा फाल्गुनी	11.11.20	कन्या 12.00	रमा एकादशी व्रत, सर्वार्थ सिद्धि योग 28.24 से 30.58 तक
द्वादशी	21.30	गुरु	उत्तरा फाल्गुनी	12.11.20	कन्या	गोवत्स द्वादशी
त्रयोदशी	17.59	शुक्र	चित्रा	13.11.20	तुला 12.31	धन्वन्तरी जयन्ती, धन्तेरस, प्रदोषव्रत मास शिवरात्रि, भद्रा 17.59 से 28.08
चतुर्दशी	14.17	शनि	स्वाति	14.11.20	तुला	रूप चतुर्दशी, पितृकार्ये अमावस्या, श्री महालक्ष्मी पूजनम्, दीपोत्सव, दीपावली, श्री कमला महाविद्या जयन्ती, श्रीपीठ श्रीजी मंदिर, श्रीधाम, मथुरा, सर्वार्थ सिद्धि योग 07.00 से 20.08
अमावस्या	10.36	रवि	विशाखा	15.11.20	वृश्चिक 11.57	देवकार्ये अमावस्या, अन्नकूट गोवर्धन पूजा, महर्षि दयानन्द जयन्ती, वृश्चिक संक्रान्ति (विष्णुपदी संज्ञक) 30.52

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त	वार समय राहुकाल
प्रतिपदा	01.11.2020	06.51	17.52	बुध दिवा १२।० से १।३०
सप्तमी	08.11.2020	06.55	17.47	रवि सायं ४।३० से ६।० गुरु दिवा १।३० से ३।०
अमावस्या	15.11.2020	07.01	17.44	सोम प्रातः ७।३० से ६।० शुक्र प्रातः १०।३० से १२।०
				मंगल दिवा ३।० से ४।३० शनि प्रातः ६।० से १०।३०

॥ श्री मन्महागणाधिपतये नमः ॥

॥ श्री श्रीजी महाराज की जय ॥

॥ श्री गुरुजी महाराज की जय ॥



॥ श्री गोपाल जी महाराज की जय ॥

॥ श्री बाबा महाराज की जय ॥

वि० सं० 2077

शाके 1942

ईस्वी सन् 2020-21

कार्तिक (ऊर्जश्री) शुक्लपक्ष

हेमन्त ऋतु

सूर्य दक्षिणायन-दक्षिणगोले

तिथि	समाप्ति घं०मि०	वार	नक्षत्र	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	07.06	सोम	अनुराधा	16.11.20	वृश्चिक	चन्द्रदर्शन, सर्वार्थ सिद्धि योग 07.01 से 14.35, भाईदूज, यमद्वितीया, विश्वकर्मा पूजा, चित्रगुप्त पूजा
द्वितीया	27.56	सोम	—	—	—	द्वितीया क्षय
तृतीया	25.17	मंगल	ज्येष्ठा	17.11.20	धनु 12.20	
चतुर्थी	23.16	बुध	मूल	18.11.20	धनु	भद्रा 12.17 से 23.16 तक
पंचमी	21.59	गुरु	पूर्वाषाढा	19.11.20	मकर 15.29	सौभाग्यज्ञान, पांडव पंचमी
षष्ठी	21.29	शुक्र	उत्तराषाढा	20.11.20	मकर	सूर्यषष्ठी डालाछठ, सर्वार्थ सिद्धि योग 09.21 से, मकर में गुरु 13.24
सप्तमी	21.48	शनि	श्रवण	21.11.20	कुंभ 22.25	सहस्राजुन जयन्ती, भद्रा 21.48 से, सर्वार्थ सिद्धि योग 09.52 तक, पंचक प्रारंभ 22.25
अष्टमी	22.51	रवि	धनिष्ठा	22.11.20	कुंभ	गोपाष्टमी, भद्रा 10.20 तक
नवमी	24.32	सोम	शतभिषा	23.11.20	कुंभ	अक्षय आंवला नवमी
दशमी	26.42	मंगल	पूर्वा भाद्रपदी	24.11.20	मीन 08.51	सर्वार्थ सिद्धि योग 15.31 से 31.08 तक, कंसवध मेला, मथुरा
एकादशी	29.10	बुध	उत्तरा भा०	25.11.20	मीन	देवप्रबोधिनी एकादशी, व्रत, श्री तुलसी विवाह, भीष्मपंचक व्रतारम्भ, देव दीपावली उत्सव, श्रीपीठ श्रीजी मंदिर, मथुरा, भद्रा 15.21 से 29.10
द्वादशी	सर्वेषाम	गुरु	रेवती	26.11.20	मेष 21.19	सर्वार्थ सिद्धि योग 07.09 से, पंचक समाप्त 21.19
द्वादशी	07.46	शुक्र	अश्विनी	27.11.20	मेष	सर्वार्थ सिद्धि योग 24.22 तक, प्रदोष व्रत
त्रयोदशी	10.21	शनि	भरणी	28.11.20	मेष	वैकुण्ठ चतुर्दशी, वृश्चिक में बुध 07.04
चतुर्दशी	12.47	रवि	कृतिका	29.11.20	वृष 10.00	पूर्णिमाव्रत, 12.47 से 25.53 तक
पूर्णिमा	14.59	सोम	रोहिणी	30.11.20	वृष	पूर्णिमा पुण्यकाल, कार्तिक स्नान पूर्ण, श्री गुरुनानक जयन्ती, श्री निम्बार्क जयन्ती, सर्वार्थ सिद्धि योग 07.12 से 31.13 जीव ब्रह्मोत्सव, श्री पीठ, श्रीजी मन्दिर

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त	वार समय राहुकाल
प्रतिपदा	16.11.2020	07.01	17.44	बुध दिवा १२।० से १।३०
अष्टमी	22.11.2020	07.06	17.42	रवि सायं ४।३० से ६।० गुरु दिवा १।३० से ३।०
पूर्णिमा	30.11.2020	07.12	17.41	सोम प्रातः ७।३० से ६।० शुक्र प्रातः १०।३० से १२।०
				मंगल दिवा ३।० से ४।३० शनि प्रातः ६।० से १०।३०

॥ श्री मन्महागणाधिपतये नमः॥

॥ श्री श्रीजी महाराज की जय॥

॥ श्री गुरुजी महाराज की जय॥



॥ श्री गोपाल जी महाराज की जय॥

॥ श्री बाबा महाराज की जय॥

वि०सं० 2077

मार्गशीर्ष (सहश्री) कृष्णपक्ष

शाके 1942

हेमंत ऋतु

ईस्वी सन् 2020-21

सूर्य दक्षिणायन-दक्षिणगोले

तिथि	समाप्ति घं०मि०	वार	नक्षत्र	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	16.51	मंगल	रोहिणी	01.12.20	मिथुन 21.36	
द्वितीया	18.21	बुध	मृगशिरा	02.12.20	मिथुन	भद्रा 30.53 से, सर्वार्थ सिद्धि योग 07.13 से 10.37 तक
तृतीया	19.26	गुरु	आर्द्रा	03.12.20	मिथुन	चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय रात्रि 20.05, भद्रा 19.26 तक, सर्वार्थ सिद्धि योग 07.13 से
चतुर्थी	20.03	शुक्र	पुनर्वसु	04.12.20	कर्क 07.21	सर्वार्थ सिद्धि योग 13.38 तक
पंचमी	20.10	शनि	पुष्य	05.12.20	कर्क	श्री मायानन्द चैतन्य जयन्ती
षष्ठी	19.44	रवि	आश्लेषा	06.12.20	सिंह 14.45	भद्रा 19.44 से 31.15
सप्तमी	18.47	सोम	मघा	07.12.20	सिंह	श्री कालभैरवाष्टमी, भैरव समुत्पत्ति जयन्ती उत्सव, श्रीपीठ श्रीजीमंदिर, श्रीधाम मथुरा
अष्टमी	17.17	मंगल	पूर्वा फा०	08.12.20	कन्या 19.31	
नवमी	15.17	बुध	उत्तरा फा०	09.12.20	कन्या	भद्रा 26.04 से, सर्वार्थ सिद्धि योग 12.32 से 31.19 तक
दशमी	12.51	गुरु	हस्त	10.12.20	तुला 21.51	भद्रा 12.59 तक
एकादशी	10.04	शुक्र	चित्रा	11.12.20	तुला	उत्पत्ति एकादशी व्रत
द्वादशी	31.02	शुक्र	—	—	—	द्वादशी क्षय
त्रयोदशी	27.52	शनि	विशाखा	12.12.20	वृश्चिक 22.40	शनि प्रदोष व्रत, भद्रा 27.52 से
चतुर्दशी	24.44	रवि	अनुराधा	13.12.20	वृश्चिक	मास शिवरात्रि व्रत, श्री बाला जयन्त्योत्सव, श्रीपीठ श्रीजी मंदिर, श्रीधाम मथुरा, भद्रा 14.19 तक
अमावस्या	21.46	सोम	ज्येष्ठा	14.12.20	धनु 23.25	देवपितृकार्य सोमवती अमावस्या

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त	वार समय राहुकाल
प्रतिपदा	01.12.2020	07.13	17.41	बुध दिवा १२।० से १।३०
अष्टमी	08.12.2020	07.18	17.42	रवि सायं ४।३० से ६।० गुरु दिवा १।३० से ३।०
अमावस्या	14.12.2020	07.22	17.44	सोम प्रातः ७।३० से ६।० शुक्र प्रातः १०।३० से १२।०
				मंगल दिवा ३।० से ४।३० शनि प्रातः ६।० से १०।३०

॥ श्री मन्महागणाधिपतये नमः॥

॥ श्री श्रीजी महाराज की जय॥



॥ श्री गोपाल जी महाराज की जय॥

॥ श्री गुरुजी महाराज की जय॥

॥ श्री बाबा महाराज की जय॥

वि०सं० 2077

श्राके 1942

ईस्वी सन् 2020-21

मार्गशीर्ष (सहश्री) शुक्लपक्ष हेमन्त-शिशिर ऋतु सूर्य दक्षिणा-उत्तरायणे-दक्षिणगोले

तिथि	समाप्ति घं०मि०	वार	नक्षत्र	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	19.06	मंगल	मूल	15.12.20	धनु	धनु संक्रान्ति (षडशीतिमुखा संज्ञक) 21.31
द्वितीया	16.54	बुध	पूर्वाषाढा	16.12.20	मकर 25.47	चन्द्रदर्शन
तृतीया	15.17	गुरु	उत्तराषाढा	17.12.20	मकर	भद्रा 26.49 से
चतुर्थी	14.22	शुक्र	श्रवण	18.12.20	कुंभ 31.15	वैनायकी चतुर्थी व्रत, भद्रा 14.22 तक, सर्वार्थ सिद्धि योग 07.24 से 19.03 तक, पंचक प्रारंभ 31.15
पंचमी	14.14	शनि	धनिष्ठा	19.12.20	कुंभ	श्री रामजानकी विवाहोत्सव श्रीपीठ श्रीजी मंदिर बड़ी हवेली, श्रीधाम मथुरा, देवीपर्व, विहार पंचमी, श्री बांकेबिहारी प्राकट्योत्सव
षष्ठी	14.52	रवि	शतभिषा	20.12.20	कुंभ	चम्पाषष्ठी, स्कन्दगृह षष्ठी
सप्तमी	16.15	सोम	पूर्वा भाद्रपदी	21.12.20	मीन 16.28	मित्र सप्तमी, नरसी मेहता जयन्ती, भद्रा 16.15 से 29.14 तक, शिशिर ऋतु प्रारंभ
अष्टमी	18.14	मंगल	उत्तरा भा०	22.12.20	मीन	सर्वार्थ सिद्धि योग 07.26 से 25.36
नवमी	20.39	बुध	रेवती	23.12.20	मेष 28.32	पंचक समाप्त 28.32
दशमी	23.17	गुरु	अश्विनी	24.12.20	मेष	दशादित्य व्रत , सर्वार्थ सिद्धि योग 07.27 से, मेष में मंगल 10.18
एकादशी	25.54	शुक्र	अश्विनी	25.12.20	मेष	मोक्षदा एकादशी व्रत, श्री गीता जयन्ती, महामना मालवीय जयन्ती, भद्रा 12.36 से 25.54, सर्वार्थ सिद्धि योग 07.35
द्वादशी	28.18	शनि	भरणी	26.12.20	वृष 17.17	व्यंजन द्वादशी
त्रयोदशी	30.20	रवि	कृतिका	27.12.20	वृष	शनि प्रदोष व्रत
चतुर्दशी	सर्वेषाम	सोम	रोहिणी	28.12.20	मिथुन 28.38	पिशाचमोचन श्राद्ध, सर्वार्थ सिद्धि योग 07.08 से 31.29, अमृत सिद्धि योग 15.38 से 31.29
चतुर्दशी	07.54	मंगल	मृगशिरा	29.12.20	मिथुन	पूर्णिमाव्रत, श्री अन्नपूर्णा जयन्ती, श्री दत्तगुरु महाप्रभु जयन्ती, सत्यव्रत, श्री त्रिपुरमैरवी महाविद्या जयन्ती, श्रीपाद दत्तात्रेय जयन्ती, षोडशी त्रिपुरसुन्दरी जयन्त्योत्सव, श्रीपीठ श्रीजी मंदिर, श्रीधाम मथुरा, भद्रा 07.54 से 20.26 तक
पूर्णिमा	08.57	बुध	आर्द्रा	30.12.20	मिथुन	पूर्णिमा पुण्यकाल

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त	वार समय राहुकाल
प्रतिपदा	15.12.2020	07.22	17.44	बुध दिवा १२।० से १।३०
अष्टमी	23.12.2020	07.26	17.47	रवि सायं ४।३० से ६।० गुरु दिवा १।३० से ३।०
पूर्णिमा	30.12.2020	07.29	17.51	सोम प्रातः ७।३० से ६।० शुक्र प्रातः १०।३० से १२।०
				मंगल दिवा ३।० से ४।३० शनि प्रातः ६।० से १०।३०

॥ श्री मन्महागणाधिपतये नमः॥

॥ श्री श्रीजी महाराज की जय॥

॥ श्री गुरुजी महाराज की जय॥



॥ श्री गोपाल जी महाराज की जय॥

॥ श्री बाबा महाराज की जय॥

वि०सं० 2077

शाके 1942

ईस्वी सन् 2020-21

पौष (सहस्यश्री) कृष्णपक्ष

शिशिर ऋतु

सूर्य दक्षिणयणे-दक्षिणगोले

तिथि	समाप्ति घं०मि०	वार	नक्षत्र	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	09.30	गुरु	पुनर्वसु	31.12.20	कर्क 13.37	सर्वार्थ सिद्धि योग 07.29 से 31.37 तक, अमृत गुरुपुष्य योग 19.48 से 31.30
द्वितीया	09.33	शुक्र	पुष्य	01.01.21	कर्क	भद्रा 21.21 से
तृतीया	09.09	शनि	आश्लेषा	02.01.21	सिंह 20.16	भद्रा 09.09, अंगारकी चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय रात्रि 21.03
चतुर्थी	08.22	रवि	मघा	03.01.21	सिंह	धनु में शुक्र
पंचमी	31.13	रवि	—	—	—	पंचमी क्षय
षष्ठी	29.46	सोम	पूर्वा फा०	04.01.21	कन्या 25.03	भद्रा 29.46, मकर में बुध
सप्तमी	28.03	मंगल	उत्तरा फा०	05.01.21	कन्या	भद्रा 16.55 तक
अष्टमी	26.06	बुध	हस्त	06.01.21	तुला 28.28	कालाष्टमी, सर्वार्थ सिद्धि योग 07.31 से 17.08 तक
नवमी	23.57	गुरु	चित्रा	07.01.21	तुला	शनि अस्त 16.40
दशमी	21.40	शुक्र	स्वाति	08.01.21	वृश्चिक 30.57	भद्रा 10.49 से 21.40 तक
एकादशी	19.16	शनि	विशाखा	09.01.21	वृश्चिक	सफला एकादशी व्रत
द्वादशी	16.52	रवि	अनुराधा	10.01.21	वृश्चिक	प्रदोष व्रत
त्रयोदशी	14.32	सोम	ज्येष्ठा	11.01.21	धनु 09.08	मास शिवरात्रि, भद्रा 14.32 से 25.27
चतुर्दशी	12.22	मंगल	मूल	12.01.21	धनु	पितृकार्य अमावस्या, विवेकानन्द जयन्ती, युवा दिवस
अमावस्या	10.29	बुध	उत्तराषाढ़ा	13.01.21	मकर 12.05	देवकार्य अमावस्या

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त
प्रतिपदा	31.12.2020	07.29	17.52
अष्टमी	06.01.2021	07.31	17.56
अमावस्या	13.01.2021	07.31	18.01

वार	समय	राहुकाल	बुध दिवा
रवि	सायं	४।३० से ६।०	गुरु दिवा १।३० से ३।०
सोम	प्रातः	७।३० से ९।०	शुक्र प्रातः १०।३० से १२।०
मंगल	दिवा	३।० से ४।३०	शनि प्रातः ६।० से १०।३०

॥ श्री मन्महागणाधिपतये नमः ॥

॥ श्री श्रीजी महाराज की जय ॥



॥ श्री गोपाल जी महाराज की जय ॥

॥ श्री गुरुजी महाराज की जय ॥

॥ श्री बाबा महाराज की जय ॥

वि० सं० 2077

शाके 1942

ईस्वी सन् 2020-21

पौष (सहस्रश्री) शुक्लपक्ष

शिशिर ऋतु

सूर्य उत्तरायणे—दक्षिणगोले

तिथि	समाप्ति घं०मि०	वार	नक्षत्र	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	09.01	गुरु	श्रवण	14.01.21	मकर	गुप्त नवरात्र विधान, मकर संक्रान्ति (सौम्यायनसंज्ञक) 08.13, संक्रान्ति पुण्यकाल, चन्द्रदर्शन
द्वितीया	08.04	शुक्र	घनिष्ठा	15.01.21	कुंभ 17.05	पंचक प्रारंभ 17.05 से
तृतीया	07.45	शनि	शतभिषा	16.01.21	कुंभ	भद्रा 19.47 से
चतुर्थी	08.08	रवि	पूर्वा भाद्रपदी	17.01.21	मीन 25.15	भद्रा 08.08 तक, गुरु अस्त
पंचमी	09.13	चन्द्र	पूर्वा भाद्रपदी	18.01.21	मीन	
षष्ठी	10.58	मंगल	उत्तरा भाद्रपदी	19.01.21	मीन	सर्वार्थ सिद्धि योग 07.37 से 09.53
सप्तमी	13.14	बुध	रेवती	20.01.21	मेष 12.35	भद्रा 13.14 से 26.32 तक, पंचक समाप्त 12.35, गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती
अष्टमी	15.50	गुरु	अश्विनी	21.01.21	मेष	सर्वार्थ सिद्धि योग 07.30 से 15.35
नवमी	18.29	शुक्र	भरणी	22.01.21	वृष 25.24	
दशमी	20.56	शनि	कृतिका	23.01.21	वृष	सर्वार्थ—अमृत सिद्धि योग 21.32 से 31.29, नेताजी सुभाष जयन्ती
एकादशी	22.57	रवि	रोहिणी	24.01.21	वृष	पुत्रदा एकादशी व्रत, भद्रा 09.56 से 22.27
द्वादशी	24.24	सोम	मृगशिरा	25.01.21	मिथुन 13.02	महाद्वादशी, सर्वार्थ—अमृत सिद्धि योग 07.29 से 25.54, कुम्भ में बुध
त्रयोदशी	25.11	मंगल	आर्द्रा	26.01.21	मिथुन	भौम प्रदोष व्रत, 72वां गणतंत्र दिवस
चतुर्दशी	25.17	बुध	पुनर्वसु	27.01.21	कर्क 21.42	भद्रा 25.17 से, मकर में शुक्र
पूर्णिमा	24.45	गुरु	पुष्य	28.01.21	कर्क	पूर्णिमा व्रत, श्री शाकम्भरी जयन्ती, माघ स्नान प्रारम्भ, भद्रा 13.01 तक, सर्वार्थ—अमृत सिद्धि गुरुपुष्य योग 07.28 से 27.49

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त
प्रतिपदा	14.01.2021	07.31	18.02
अष्टमी	21.01.2021	07.30	18.08
पूर्णिमा	28.01.2021	07.28	18.13

वार	समय	राहुकाल	बुध दिवा
रवि	सायं	४।३० से ६।०	गुरु दिवा १।३० से ३।०
सोम	प्रातः	७।३० से ६।०	शुक्र प्रातः १०।३० से १२।०
मंगल	दिवा	३।० से ४।३०	शनि प्रातः ६।० से १०।३०

॥ श्री मन्महागणाधिपतये नमः ॥

॥ श्री श्रीजी महाराज की जय ॥



॥ श्री गोपाल जी महाराज की जय ॥

॥ श्री गुरुजी महाराज की जय ॥

॥ श्री बाबा महाराज की जय ॥

वि०सं० 2077

शाके 1942

ईस्वी सन् 2020-21

माघ (तपःश्री) कृष्णपक्ष

शिशिर ऋतु

सूर्य उत्तरायणे-दक्षिणगोले

तिथि	समाप्ति घं०मि०	वार	नक्षत्र	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	23.41	शुक्र	अश्लेषा	29.01.21	सिंह 27.20	
द्वितीया	22.12	शनि	मघा	30.01.21	सिंह	
तृतीया	20.24	रवि	पूर्वा फाल्गुनी	31.01.21	कन्या 30.57	संकष्टी चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय रात्रि 21.00, भद्रा 09.18 से 20.24, सर्वार्थ सिद्धि योग 25.17 से 31.26
चतुर्थी	18.24	सोम	उत्तरा फाल्गुनी	01.02.21	कन्या	
पंचमी	16.19	मंगल	हस्त	02.02.21	कन्या	
षष्ठी	14.12	बुध	चित्रा	03.02.21	तुला 09.49	भद्रा 14.12 से 25.10
सप्तमी	12.07	गुरु	स्वाती	04.02.21	तुला	श्री रामानन्दाचार्य जयन्ती
अष्टमी	10.07	शुक्र	विशाखा	05.02.21	वृश्चिक 12.46	सर्वार्थ सिद्धि योग 18.27 से 31.24
नवमी	08.13	शनि	अनुराधा	06.02.21	वृश्चिक	भद्रा 19.19 से 30.25
दशमी	30.25	शनि	—	—	—	दशमी क्षय
एकादशी	28.47	रवि	ज्येष्ठा	07.02.21	धनु 16.14	षट्तिला एकादशी व्रत, सर्वार्थ सिद्धि योग 16.14 से 31.22
द्वादशी	27.19	सोम	मूल	08.02.21	धनु	
त्रयोदशी	26.05	मंगल	पूर्वाषाढ़ा	09.02.21	मकर 20.29	भौम प्रदोष व्रत, भद्रा 26.05 से
चतुर्दशी	25.08	बुध	उत्तराषाढ़ा	10.02.21	मकर	मास शिवरात्रि, भद्रा 13.36 तक
अमावस्या	24.35	गुरु	श्रवण	11.02.21	कुंभ 26.10	देवपितृकार्य अमावस्या, माघी मौनी अमावस्या, प्रयागराज स्नान मेला, पंचक प्रारंभ 26.10

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त	वार	समय	राहुकाल	बुध	दिवा
प्रतिपदा	29.01.2021	07.28	18.14	रवि	सायं	४।३० से ६।०	गुरु	दिवा १।३० से ३।०
अष्टमी	05.02.2021	07.24	18.19	सोम	प्रातः	७।३० से ६।०	शुक्र	प्रातः १०।३० से १२।०
अमावस्या	11.02.2021	07.20	18.24	मंगल	दिवा	३।० से ४।३०	शनि	प्रातः ६।० से १०।३०

॥ श्री मन्महागणाधिपतये नमः ॥

॥ श्री श्रीजी महाराज की जय ॥



॥ श्री गोपाल जी महाराज की जय ॥

॥ श्री गुरुजी महाराज की जय ॥

॥ श्री बाबा महाराज की जय ॥

वि०सं० 2077

शाके 1942

ईस्वी सन् 2020-21

माघ (तपःश्री) शुक्लपक्ष

शिशिर-बसंत ऋतु

सूर्य उत्तरायणे-दक्षिणगोले

तिथि	समाप्ति घं०मि०	वार	नक्षत्र	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	24.29	शुक्र	धनिष्ठा	12.02.21	कुंभ	श्री विद्या ललितोत्सवारम्भः कुम्भ संक्रान्ति (विष्णुपदी संज्ञक) 21.11
द्वितीया	24.56	शनि	शतभिषा	13.02.21	कुंभ	चन्द्रदर्शन, गुरु उदय 25.10
तृतीया	25.58	रवि	पूर्वा भाद्रपदी	14.02.21	मीन 10.08	सर्वार्थ सिद्धि योग 16.32 से 21.18, गौरी तृतीया
चतुर्थी	27.56	सोम	उत्तरा भाद्रपदी	15.02.21	मीन	वरद-विनायक तिल चतुर्थी, भद्रा 14.57 से 27.56
पंचमी	29.46	मंगल	रेवती	16.02.21	मेष 20.55	बसन्त पंचमी, श्री सरस्वती जयन्ती, देवीपर्व, श्रीपीठ श्रीजी मंदिर, श्रीधाम मथुरा, पंचक समाप्त 20.55
षष्ठी	सर्वेषाम	बुध	अश्विनी	17.02.21	मेष	
षष्ठी	08.17	गुरु	भरणी	18.02.21	मेष	बसन्त ऋतु प्रारंभ
सप्तमी	10.58	शुक्र	कृतिका	19.02.21	वृष 09.40	भानु सप्तमी, श्री नर्मदा जयन्ती, भद्रा 10.58 से 24.15
अष्टमी	13.31	शनि	रोहिणी	20.02.21	वृष	भीमाष्टमी पर्व, सर्वार्थ-अमृत सिद्धि योग 07.14 से 31.13, कुंभ में शुक्र
नवमी	15.42	रवि	रोहिणी	21.02.21	मिथुन 21.54	वृष में मंगल 28.35
दशमी	17.16	सोम	मृगशिरा	22.02.21	मिथुन	भद्रा 29.41 से, सर्वार्थ-अमृत सिद्धि योग 07.12 से 10.57 तक, राधादामोदर प्राकट्योत्सव
एकादशी	18.05	मंगल	आर्द्रा	23.02.21	कर्क 31.09	जया एकादशी व्रत, भद्रा 18.05 तक
द्वादशी	18.05	बुध	पुनर्वसु	24.02.21	कर्क	भीष्मद्वादशी, प्रदोष व्रत
त्रयोदशी	17.18	गुरु	पुष्य	25.02.21	कर्क	सर्वार्थ-अमृत गुरुपुष्य योग 07.09 से 13.16
चतुर्दशी	15.49	शुक्र	अश्लेषा	26.02.21	सिंह 12.34	पूर्णिमा व्रत, श्री स्वामी करपात्रीजी पुण्यतिथि
पूर्णिमा	13.46	शनि	मघा	27.02.21	सिंह	पूर्णिमा पुण्यकाल, सन्त रविदास जयन्ती, श्री ललिता, श्री विद्या जयन्ती श्रीपीठ श्रीजी दरबार, अभिषेक विशेषार्चन, माघ स्नान पूर्ण

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त	वार समय राहुकाल
प्रतिपदा	12.02.2020	07.20	18.24	बुध दिवा १२।० से १।३०
अष्टमी	20.02.2020	07.14	18.30	रवि सायं ४।३० से ६।० गुरु दिवा १।३० से ३।०
पूर्णिमा	27.02.2020	07.07	18.34	सोम प्रातः ७।३० से ६।० शुक्र प्रातः १०।३० से १२।०
				मंगल दिवा ३।० से ४।३० शनि प्रातः ६।० से १०।३०

॥ श्री मन्महागणाधिपतये नमः ॥

॥ श्री श्रीजी महाराज की जय ॥

॥ श्री गुरुजी महाराज की जय ॥

वि० सं० २०७७

फाल्गुन (तपस्यश्री) कृष्णपक्ष



॥ श्री गोपाल जी महाराज की जय ॥

॥ श्री बाबा महाराज की जय ॥

शाके १९४२

बसन्त ऋतु

ईस्वी सन् २०२०-२१

सूर्य उत्तरायणे-दक्षिणगोले

तिथि	समाप्ति घं०मि०	वार	नक्षत्र	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	११.१८	रवि	पूर्वा फाल्गुनी	२८.०२.२१	कन्या १५.०६	सर्वार्थ सिद्धि योग ०९.३५ से ३१.०५
द्वितीया	०८.३५	सोम	उत्तरा फाल्गुनी	०१.०३.२१	कन्या	भद्रा १९.११ से २९.४६ तक
तृतीया	२९.४६	सोम	—	—	—	तृतीया क्षय
चतुर्थी	२६.५९	मंगल	चित्रा	०२.०३.२१	तुला १६.२९	चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय रात्रि २१.५७
पंचमी	२४.२१	बुध	स्वाति	०३.०३.२१	तुला	
षष्ठी	२१.५८	गुरु	विशाखा	०४.०३.२१	वृश्चिक १८.१९	भद्रा २१.५८ से, सर्वार्थ सिद्धि योग २३.५६ से
सप्तमी	१९.५४	शुक्र	अनुराधा	०५.०३.२१	वृश्चिक	भद्रा ०८.५६ तक
अष्टमी	१८.१०	शनि	ज्येष्ठा	०६.०३.२१	धनु २१.३७	श्री सीताष्टमी पर्व
नवमी	१६.४७	रवि	मूल	०७.०३.२१	धनु	समर्थ रामदास नवमी, भद्रा २८.१६ से, सर्वार्थ सिद्धि योग ०६.५९ से २०.५८ तक
दशमी	१५.४४	सोम	पूर्वाषाढा	०८.०३.२१	मकर २६.३८	भद्रा १५.४४ तक
एकादशी	१५.०२	मंगल	उत्तराषाढा	०९.०३.२१	मकर	विजया एकादशी व्रत
द्वादशी	१४.४०	बुध	श्रवण	१०.०३.२१	मकर	प्रदोष व्रत
त्रयोदशी	१४.३९	गुरु	धनिष्ठा	११.०३.२१	कुंभ ०९.२०	श्री महाशिवरात्रि व्रत, भद्रा १४.३९ से २६.५० तक, पंचक प्रारंभ ०९.२० से
चतुर्दशी	१५.०२	शुक्र	शतभिषा	१२.०३.२१	कुंभ	
अमावस्या	१५.५०	शनि	पूर्वा भाद्रपदी	१३.०३.२१	मीन १७.५६	देवपितृकार्य अमावस्या, देवपितृकार्य अमावस्या, शिव खण्ड पूजा

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त
प्रतिपदा	२८.०२.२०२१	०७.०६	१८.३५
अष्टमी	०६.०३.२०२१	०७.००	१८.३८
अमावस्या	१३.०३.२०२१	०६.५३	१८.४२

वार	समय	राहुकाल	बुध	दिवा
रवि	सायं	४।३० से ६।०	गुरु	दिवा १।३० से ३।०
सोम	प्रातः	७।३० से ९।०	शुक्र	प्रातः १०।३० से १२।०
मंगल	दिवा	३।० से ४।३०	शनि	प्रातः ६।० से १०।३०

॥ श्री मन्महागणाधिपतये नमः ॥

॥ श्री श्रीजी महाराज की जय ॥



॥ श्री गोपाल जी महाराज की जय ॥

॥ श्री गुरुजी महाराज की जय ॥

॥ श्री बाबा महाराज की जय ॥

वि०सं० 2077

शाके 1942

ईस्वी सन् 2020-21

फाल्गुन (तपस्यश्री) शुक्लपक्ष

बसन्त ऋतु सूर्य उत्तरायणे—दक्षिण—उत्तरगोले

तिथि	समाप्ति घं०मि०	वार	नक्षत्र	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	17.06	रवि	शतभिषा	14.03.21	मीन	मीन संक्रान्ति (षडशीतिमुखा संज्ञक) 18.02, सर्वार्थ सिद्धि योग 06.52 से 26.18 तक
द्वितीया	18.49	सोम	पूर्वा भाद्रपदी	15.03.21	मेष 25.42	चन्द्रदर्शन, फुलैरा दौज अबूझ मुहूर्त, पंचक समाप्त 25.42
तृतीया	20.58	मंगल	उत्तरा भा०	16.03.21	मेष	सर्वार्थ—अमृत सिद्धि योग 06.57 से 30.49, मीन में शुक्र, राक्षस नाम सम्बत्सर प्रवेश
चतुर्थी	23.28	बुध	रेवती	17.03.21	मेष	भद्रा 17.13 से 23.28 तक
पंचमी	26.09	गुरु	अश्विनी	18.03.21	वृष 17.21	
षष्ठी	28.48	शुक्र	भरणी	19.03.21	वृष	
सप्तमी	सर्वेषाम	शनि	कृतिका	20.03.21	मिथुन 30.08	सर्वार्थ—अमृत सिद्धि योग 06.46 से 20.06 तक, उत्तरगोलीय गति प्रा०
सप्तमी	07.10	रवि	कृतिका	21.03.21	मिथुन	भद्रा 07.10 से 20.06 तक
अष्टमी	09.00	सोम	रोहिणी	22.03.21	मिथुन	होलिकाष्टक प्रारम्भ
नवमी	10.07	मंगल	मृगशिरा	23.03.21	कर्क 16.29	लट्ठमार होली बरसाना, श्रीधाम मथुरा
दशमी	10.23	बुध	आर्द्रा	24.03.21	कर्क	लट्ठमार होली नन्दगांव, श्रीधाम मथुरा, भद्रा 22.06 से
एकादशी	09.47	गुरु	पुनर्वसु	25.03.21	सिंह 22.48	आमलकी एकादशी व्रत, रंगभरनी एकादशी, लट्ठमार होली, जन्मभूमि, श्रीधाम मथुरा, भद्रा 09.48 तक,
द्वादशी	08.21	शुक्र	पुष्य	26.03.21	सिंह	प्रदोष व्रत, गोविन्द द्वादशी
त्रयोदशी	30.11	शुक्र	—	—	—	त्रयोदशी क्षय
चतुर्दशी	27.26	शनि	मघा	27.03.21	कन्या 25.19	भद्रा 27.26 से
पूर्णिमा	24.17	रवि	पूर्वा फाल्गुनी	28.03.21	कन्या	पूर्णिमाव्रतं, सत्यव्रत, होलिकार्पव दीपनं प्रदोषकाल में सायं 18.49 से 21.13 तक, दारुणरात्रि, श्री चैतन्य महाप्रभु जयन्ती, भद्रा 13.51 तक

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त
प्रतिपदा	14.03.2021	06.52	18.42
अष्टमी	22.03.2021	06.43	18.46
पूर्णिमा	28.03.2021	06.37	18.49

वार	समय	राहुकाल	बुध दिवा
रवि	सायं ४।३० से ६।०	गुरु दिवा १।३० से ३।०	
सोम	प्रातः ७।३० से ६।०	शुक्र प्रातः १०।३० से १२।०	
मंगल	दिवा ३।० से ४।३०	शनि प्रातः ६।० से १०।३०	

॥ श्री मन्महागणाधिपतये नमः ॥

॥ श्री श्रीजी महाराज की जय ॥



॥ श्री गोपाल जी महाराज की जय ॥

॥ श्री गुरुजी महाराज की जय ॥

॥ श्री बाबा महाराज की जय ॥

वि०सं० 2077

शाके 1942

ईस्वी सन् 2020-21

चैत्र (मधुश्री) कृष्णपक्ष

बसन्त ऋतु

सूर्य उत्तरायणे-दक्षिणगोले

तिथि	समाप्ति घं०मि०	वार	नक्षत्र	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	20.54	सोम	हस्त	29.03.21	तुला 25.41	धुलैडी पर्व
द्वितीया	17.27	मंगल	चित्रा	30.03.21	तुला	सन्त तुकाराम जयन्ती, भद्रा 27.47 से
तृतीया	14.06	बुध	स्वाती	31.03.21	वृश्चिक 25.55	चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय रात्रि 21.56, भद्रा 14.06 तक, मीन में बुध
चतुर्थी	10.59	गुरु	विशाखा	01.04.21	वृश्चिक	सर्वार्थ सिद्धि योग 07.21 से 29.15
पंचमी	08.15	शुक्र	ज्येष्ठा	02.04.21	धनु 27.43	श्री रंगपंचमी, एकनाथ षष्ठी, भद्रा 29.58 से
षष्ठी	29.58	शुक्र	—	—	—	षष्ठी क्षय
सप्तमी	28.12	शनि	मूल	03.04.21	धनु	शीतला सप्तमी, भद्रा 17.04 तक
अष्टमी	26.59	रवि	पूर्वाषाढ़ा	04.04.21	धनु	शीतलाष्टमी पर्व बासौड़ा, सर्वार्थ सिद्धि योग 26.05 से 30.28 तक
नवमी	26.18	सोम	उत्तराषाढ़ा	05.04.21	मकर 08.01	सर्वार्थ सिद्धि योग 26.04 से 30.27
दशमी	26.09	मंगल	श्रवण	06.04.21	मकर	भद्रा 14.13 से 26.09
एकादशी	26.28	बुध	धनिष्ठा	07.04.21	कुंभ 14.59	पापमोचिनी एकादशी व्रत, पंचक प्रारंभ 14.59
द्वादशी	27.15	गुरु	शतभिषा	08.04.21	कुंभ	
त्रयोदशी	28.27	शुक्र	पूर्वा भाद्रपदी	09.04.21	मीन 24.16	प्रदोषव्रत, रंगतेरस, भद्रा 28.27 से
चतुर्दशी	30.03	शनि	पूर्वा भाद्रपदी	10.04.21	मीन	मास शिवरात्रि, भद्रा 17.05 तक, मेष में शुक्र
अमावस्या	सर्वेषाम	रवि	उत्तरा भाद्रपदी	11.04.21	मीन	पितृकार्ये अमावस्या, सर्वार्थ सिद्धि योग 06.22 से 08.56 तक
अमावस्या	08.00	सोम	रेवती	12.04.21	मेघ 11.28	देवकार्ये सोमवती अमावस्या, पंचक समाप्त 11.28

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त
प्रतिपदा	29.03.2021	06.36	18.49
अष्टमी	04.04.2021	06.29	18.52
अमावस्या	12.04.2021	06.21	18.56

वार	समय	राहुकाल	बुध	दिवा
रवि	सायं	४।३० से ६।०	गुरु	दिवा १।३० से १।३०
सोम	प्रातः	७।३० से ९।०	शुक्र	प्रातः १०।३० से १२।०
मंगल	दिवा	३।० से ४।३०	शनि	प्रातः ६।० से १०।३०

आदि गुरुगादी - ऊर्ध्वाग्राय सिद्ध श्रीपीठ श्रीजी मंदिर, बड़ी हवेली (श्रीजी दरबार) और यहाँ की महान गुरुपरम्परा

॥ ओं नमो ब्रह्मादिभ्यो ब्रह्मविद्या सम्प्रदाय कर्तृभ्यो वंशऋषिभ्यो नमो गुरुभ्यः ॥

कहा गया है कि - गुरु और गोविन्द दोनों जब सामने हों तो अधिक पूज्य कौन है ? उत्तर है कि गुरु बड़े हैं क्योंकि गोविन्द को बताने वाले वे ही हैं। इसे कुछ और स्पष्ट करते हैं, देखो सामवेदीय तलवारकर शाखा की केनोपनिषत् श्रुति कहती है कि -

तत्र चक्षुः न गच्छति ।

न वाक् गच्छति ।

न उ मनः गच्छति ।

वहाँ न चक्षु जा सकता है न वाणी न मन, क्योंकि वह तो वो शक्ति है जिसकी सामर्थ्य से चक्षु वाक और मन अपने-अपने कार्य को कर पाते हैं अतः -

न विदमो न विजानीमो यथैतदनुशिष्यात् ।

ऋषि कहते हैं कि हम न उसे जानते हैं और न ही यह जानते हैं कि उसकी शिक्षा कैसे दी जाय उस तत्व का उपदेश कैसे किया जाय ? क्योंकि वह विदित से अन्य है और अविदित से भी परे है, वह ऐसा है विदित और अविदित दोनों से परे ये भी हमने गुरुओं से परम्परा के द्वारा सुना है जिन्होंने उस पर तत्व की हमारे बोध के लिए व्याख्या की ।

इति सुश्रुम पूर्वेषां ।

पूर्व गुरुओं से सुना, गुरु परम्परा से सुना । अच्छा जी, तो कैसे बतावें ब्रह्म को ? कि बताने की एक ही युक्ति है जो हमें गुरु परम्परा से प्राप्त हुई है जो हमें हमारे गुरु महाराज ने बताई है कि बिल्कुल नहीं समझा सकते सो बात नहीं है, तुम जो चाहते हो कि हम इन्द्रियों से देख लें, मन से देख लें, बुद्धि से देख लें ये तो असंभव है ? जिन इन्द्रियों से जिस बुद्धि से जिस मन से तुम उसे देखना चाहते हो वे तो उसी के पेट में, उसी के प्रकाश में, उसकी सामर्थ्य से ही अपने कार्य कर पाते हैं ।

ये वाग्मनसगोचरत्वेन अनिर्वचनीय है ।

है तो प्रत्यक्ष ज्ञान स्वरूप साक्षात् अपरोक्ष किन्तु मन, वाणी आदिक से अनिर्वचनीय, अवर्णनीय है। उसे केवल आगम से ही समझाया जा सकता है, कि महाराज ये आगम क्या है ? देखो, इस चिन्मात्र तत्व के जो अनुभवी महापुरुष हुए हैं उनके वचनों से, उन्हें चाहे पौरुषेय कहो या अपौरुषेय भाई बात यह है कि

‘अखण्ड सच्चिदानन्दं महावाक्येन लक्ष्यते’ कि अखण्ड सच्चिदानन्द जो तत्त्व है, जो परब्रह्म है, जो पर तत्त्व है वह महावाक्य से ही लक्षित होता है। और इन महावाक्यों के प्रकाशक जो हैं उपदेश करने वाले जो हैं वे हैं श्री गुरु! सद्गुरुदेव, गुरुनाथ !

तो कहने का आशय यह है कि श्री गुरु वे तत्त्व हैं जो सनक, सनन्दन, सनातन, सनत्कुमार, महाप्रभु दत्त और अमलात्मा शुकदेव आदिक महात्माओं द्वारा उपदेशित ब्रह्मतत्त्व का पर तत्त्व का हमारे लिए उपदेश करते हैं - कि तत्त्वमसि श्वेतकेतो कि तू वही है । अतः कहा गया कि ‘बलिहारि गुरु आपने गोविन्द दियौ बताय’ । देखो ये हड्डी मांस का साढ़े तीन हाथ का शरीर जिसे चर्म से लपेटा गया है जिसमें हाथ, पैर, वाणी, गुदा, उपस्थ ये कर्मेन्द्रियां, आंख, कान, नाक, जिह्वा, त्वचा ये पाँच ज्ञानेन्द्रियां और मन, बुद्धि, चित्त अहंकार ये चार वृत्तियां - अंतःकरण चतुष्टय हैं, अन्नमय प्राणमय मनोमय विज्ञानमय आनंदमय ये पांच कोष हैं वह समुच्चय क्या आप हैं क्या आपका आपा है ? अरे नहीं वह तो अन्तःकरण की वृत्ति है अहं जिसे आप स्व मानते हैं आपका स्व आपका मैं तो ब्रह्म है, सर्वब्रह्मैव - ये सब कुछ ब्रह्म है और तत्त्वमसि श्वेतकेतो ये बताने वाले ये समझाने वाले कि श्वेतकेतु तू वही है - श्री गुरुदेव श्री गुरुमहाराज ब्रह्म विद्या के उपदेशक, ब्रह्म विद्या की अक्षुण्ण गुरु परम्परा और ऐसी ही एक परम्परा है ऊर्ध्वाम्नाय श्रीपीठ श्री श्रीजी मंदिर, बड़ी हवेली (श्रीजी दरबार) की गुरुपरम्परा । गुं गुरुपादुकाभ्यो नमः ।।

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम् ।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतं
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि ।।
सर्वतंत्रं स्वतंत्राञ्च श्रीविद्यापीठस्थ देशिकाः ।
श्री श्री शीलचन्द्राचार्यास्तत्पुत्रा वासुदेवस्तपोधनः ।।
तत्पुत्रा केशवाचार्याः सर्वशास्त्र विशारदाः ।
तेषां शिवप्रकाशाख्या ज्येष्ठपुत्रा यशस्विनः ।।
तत्पुत्रा लक्ष्मीपतयाचार्याः ब्रह्मतत्त्व विशारदाः ।
तेषां सुरेशाचार्यः ज्येष्ठपुत्रा यशस्विनः ।।
साम्प्रतं तत्सुता श्रीकान्ताचार्यः पीठ संस्थिताः ।।

श्रीविद्यापीठ सिद्ध गादी पर सर्वतन्त्र लोकवन्दित एवं सार्वदेशिक आचार्यों में अखण्ड भूमण्डलाचार्य अनन्त श्री विभूषित ब्रह्मपाद् श्री मकरन्द जी महाराज

1742 वि०, अखण्ड भूमण्डलाचार्य श्री श्रीपति जी महाराज, 1772 वि० श्री मोहन जी 1794 वि०, अखण्ड भूमण्डलाचार्य ब्रह्मपाद श्री शंकरमुनि जी महाराज 1822 वि०, अखण्ड भूमण्डलाचार्य श्री चेताराम जी महाराज 1850 वि०, अखण्ड भूमण्डलाचार्य ब्रह्मपाद श्री श्रीशीलचन्द्र जी महाराज सं० 1861 वि०, अनन्त श्री विभूषित ब्रह्मपाद श्री वासुदेव जी महाराज सं० 1902 वि०, ब्रह्मपाद श्री केशवदेव जी महाराज सं० 1940 वि०, प्रातःस्मरणीय ब्रह्मपाद श्री शिवप्रकाश देव जी महाराज सं० 1960 वि०, अनन्त श्री विभूषित ब्रह्मपाद श्री लक्ष्मीपति देवाचार्य जी महाराज सं० 1990 वि० अनन्त श्री विभूषित श्री सुरेशाचार्य जी महाराज संवत् 2055 गङ्ग यस्थ हुए हैं और वर्तमान में इस गद्दी पर आपके ज्येष्ठ पुत्र श्रीपाद आचार्य श्रीकान्त श्रीजी महाराज पीठासीन हैं।

प्रातः स्मरणीय श्री श्री शंकरमुनि जी महाराज के अलौकिक वैराग्य से प्रभावित होकर जयपुर के जगन्नाथ पण्डित राज सम्राट दीक्षित महोदय ने पूजा रत्न ग्रन्थ समर्पित किया और श्री श्री महाराज जी द्वारा महाविद्या देवी मन्दिर का शिखर बन्ध निर्माण कराकर श्रीमान् दीक्षित महोदय को महाविद्या उपासना की सिद्धि उपलब्ध कराई गई।

अखण्डभूमण्डलाचार्य अनन्त श्री विभूषित ब्रह्मपाद श्री शीलचन्द्र जी महाराज अपने समय के मूर्धन्य विद्वान् व सिद्ध गुरु थे । आपने अवन्तिकापुरी में गंगाजी की आराधना कर उनसे 'श्रीविद्या' का वर प्राप्त किया था। कुछ समय बाद जब आप मथुरा पधारे तो आपके पूज्य पिताजी अनन्त श्री विभूषित श्री चेतारामजी महाराज तथा काशी के सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री हलधर भट्ट में शास्त्रार्थ चल रहा था । आपने पूज्य पिताजी से आज्ञा प्राप्त कर उसी समय श्रीमान् हलधर भट्ट महोदय को शास्त्रार्थ में पराजित किया। **आपने मथुरा के सूर्यघाट पर 'सूर्यदेव' को प्रत्यक्ष कर उनसे कई वरदान प्राप्त किये।** एक समय ब्रह्मपाद श्री शीलचन्द्र जी महाराज ने ऐसे वार्षिकी नवरात्रोत्सव का आयोजन किया जिसमें शैलपुत्री आदि नवदुर्गाओं ने पीठ पर स्वयं प्रकट होकर पूजा ग्रहण की । **नवरात्र के षष्ठम दिवस महाराज श्री ने भगवती कात्यायनी की पूजा के लिए विश्रामघाट (मथुरा) पहुँचकर 'श्री यमुना' से भगवती कात्यायनी को प्रकट कर उनकी पूजा की यहीं से यमुना षष्ठी महोत्सव का प्रारम्भ भी हुआ जिसकी प्रथम पूजा अद्यावधि श्रीपीठ श्रीजी दरबार से ही की जाती है। यमुना षष्ठी अब केवल मथुरा में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण भारतवर्ष में मनायी जाती है।** तत्पश्चात् पुनः कालरात्रि आदि देवियों को महाराज श्री ने पीठ पर ही प्रत्यक्ष किया । ब्रज क्षेत्र में श्री विद्या की परम्परा जहां कहीं भी है आप ही के द्वारा स्थापित है।

आपके कर कमलों से व्रज क्षेत्र में तथा अन्यत्र बहुत से कार्य सम्पन्न हुए । व्रजक्षेत्र के प्रायः सभी महत्वपूर्ण मन्दिर आप ही के द्वारा प्रतिष्ठित किये गये । मथुरा का सुप्रसिद्ध द्वारिकाधीश मन्दिर, केशवदेव मन्दिर (श्रीकृष्ण जन्मभूमि) एवं वृन्दावन के प्रसिद्ध बिहारीजी एवं रंगजी के मन्दिर महाराजश्री के करकमलों से ही प्रतिष्ठित हुए हैं । इसके अलावा गजापाइसा के पास स्थित दशभुजी गणेश मन्दिर, विश्राम घाट स्थित मुकुट मन्दिर, भूतेश्वर, रंगेश्वर, गोकर्णेश्वर, वीरभद्रेश्वर, गोपेश्वर, शिवताल एवं गणेश टीला आदि मन्दिर आप ही के द्वारा प्रतिष्ठित कराये गये । संवत् 1951 में महाराज श्री ने अपने पूर्वजों द्वारा निर्मित महाविद्या देवी मन्दिर का जीर्णोद्धार और सहस्र चण्डी यज्ञ का आयोजन कराया गया जिसका कि शिलालेख यहाँ (महाविद्या मन्दिर) पर लगा हुआ है । महाराज श्री द्वारा कई बार काशी दिग्विजय भी की गई ।

इतना ही नहीं महाराज श्री महान समाज सुधारक थे । आपने समाज में फैली कुरूनीतियों को दूर करने के लिए अथक प्रयास किये । चतुर्वेद समाज के उत्थान के लिए श्री माथुर चतुर्वेद परिषद की स्थापना महाराज श्री द्वारा ही की गई । इसके अलावा चतुर्वेदियों में एक सौ पन्द्रह रुपये के विवाह आदि की व्यवस्था आपके ही द्वारा की गई । व्याकरण केसरी रंगदत्त जी, गंगदत्त जी (जिन्होंने स्वामी दयानन्द को मथुरा से पलायन पर विवश किया), कविवर नवनीत जी, बूँटी सिद्ध (गायत्री सिद्ध) एवं गणेशीलाल जी संगीत मार्तण्ड आदि आपके शिष्यों ने काफी प्रसिद्धि प्राप्त की । आपके एक शिष्य श्रीमान् बूँटी सिद्ध ने मथुरा के एक टीले पर माता गायत्री को प्रत्यक्ष किया था जिससे उस टीले का नाम गायत्री टीला और उनका नाम गायत्री सिद्ध ही पड़ गया । श्री गोपाल सुन्दरी, पीताम्बरा तथा बाला पद्मतियां आपके द्वारा रचित हैं । चौबिया पाड़े में विराजमान श्री महागणपति दशभुजी गणेश का स्वरूप श्री महाराज श्री का ही श्री विग्रह है । जब आपके शिष्यों ने आपके अन्तिम समय में आपसे प्रार्थना की कि हम सदैव आपकी सेवा करना चाहते हैं आप सदैव अपना आशीर्वाद हम पर बनाकर रखें तो महाराज श्री द्वारा दशभुजी गणेश श्री महागणपति के रूप में सदैव चतुर्वेदीयों पर आशीर्वाद बनाये रखने की प्रार्थना स्वीकार की गयी ।

सं 1902 वि० कार्तिक चतुर्थी के दिन 40 वर्ष की अवस्था में आपके यहां पुत्र का जन्म हुआ । आपले इनका नाम विघ्नहरण रखा, किन्तु प्यार का नाम 'बबुआजी' और बाद में आप वासुदेवजी महाराज के नाम से विख्यात हुए । शिष्यों में आपकी 'बाबा महाराज' के नाम से प्रसिद्धि हुई । तदनन्तर श्रीजी महाराज की अनुकम्पा से आप सर्वशास्त्र निष्णात् हो गये । बाबा महाराज की जिह्वा पर

वाग्वादिनी माता सरस्वती स्वयं विराजतीं थी। महाराज श्री द्वारा कई बार काशी दिग्विजय की गई।

आपकी शिष्य मण्डली में अर्की मण्डी के महाराज ध्यानसिंह जी थे जिन्हें आपने श्री गोपाल सुन्दरी देवी की दीक्षा तथा पूजा-पद्धति प्रदान की थी। आपके शिष्य वृंदावनजी रतनकुण्ड वालों ने तन्त्र मार्ग में बहुत प्रसिद्धि प्राप्त की। आपने वैष्णव कुलकेतु श्री देवकीनन्दन जी महाराज (कामवन वालों) को असाध्य अवस्था में बचाया। आप तंत्र-मंत्र-यंत्र श्रुति, स्मृति, धर्मशास्त्र और ज्योतिष के तत्त्ववेत्ता विद्वान् थे। श्री माथुर चतुर्वेदी परिषद् का विस्तार आप ही के सफल नेतृत्व में किया गया।

आपने वैष्णव कुलकेतु गोपाल लालजी महाराज को असाध्य अवस्था में बचाया। भरतपुर के धाऊ श्री को 60 वर्ष की अवस्था में आपने अपने मन्त्र बल से पुत्र दर्शन कराये एवं मथुरा निवासी अनेक व्यक्तियों को असाध्य परिस्थितियों से मुक्त किया। आपने तत्कालीन भरतपुर नरेश महाराज ब्रजेन्द्रसिंह को समय-समय पर अनेक अद्भुत चमत्कार दिखलाये और उनसे सम्मान में द्रव्य तथा भूमि प्राप्त की। आप ही के एक शिष्य श्रीमान् धूजी चौबे ने घोर अकाल की आशंका वाले अवर्षण काल में मन्त्र बल से इन्द्रदेव को प्रसन्न कर मूसलाधर वर्षा कराई जिससे उनका नाम ही 'मूसलाधर चौबे' पड़ गया।

एक समय महाराज श्री की इच्छा महाप्रभु श्री चैतन्य देव की जन्मभूमि को देखने की हुई और महाराज श्री ने अपने शिष्य के साथ मायापुर प्रस्थान किया, वहां पहुंचने पर ज्ञात हुआ कि महाप्रभु की जन्मभूमि तो गंगा के गर्भ में समा गयी है तब महाराज श्री ने अपने शिष्य को अपने शरीर की सुरक्षा का आदेश देकर योगबल से अपना शरीर त्याग कर, सूक्ष्म शरीर से गंगा जी के गर्भ में जाकर महाप्रभु चैतन्यदेव के जन्म स्थान के दर्शन किये और तत्पश्चात् मथुरा आये।

पौष कृष्णा 10 गुरुवार सं० 1940 को आपके पुत्र का जन्म हुआ। आपने उनका नाम केशवदेव जी प्रतिष्ठित किया। प्रातःस्मरणीय श्री केशवदेव जी का लाढ़ का नाम भैयाजी था और जनसाधारण में आप गुरुजी महाराज के नाम से प्रसिद्ध हुए।

आपका आगम निगम का अध्ययन अपने पूज्य पिताजी श्रीजी दरबार की पाठशाला में ही सम्पन्न हुआ। आप 9 वर्ष की अवस्था में सर्वशास्त्र निष्णात् हो गये थे।

आपके पितृचरण प्रातः स्मरणीय श्री वासुदेव जी महाराज के कैलाशवास के उपरान्त 35 वर्ष की अवस्था में आपको शिष्य वर्ग ने परम्परानुसार गद्दी पर

विराजमान किया । इस समय आपके अंग-अंग पर असाधारण सौन्दर्य एवं श्रीमुख पर ब्रह्म तेज की आभा व्याप्त थी । भरतपुर नरेश महाराज ब्रजेन्द्र सिंह, वैष्णव कुलकेतु श्री गोपाल लाल जी महाराज, तान्त्रिक रत्न श्रीमान् बटुकन प्रसाद जी उनके पुत्र श्री विष्णुदत्त जी आदि आपके शिष्यों ने काफी प्रसिद्धि प्राप्त की है ।

महाराज श्री के ज्येष्ठ पुत्र श्री ब्रह्मपाद शिवप्रकाश देव जी महाराज का जन्म सं० 1963 में हुआ था । महाराज श्री ने आपका नाम 'शिवप्रकाश' रखा । घर का नाम 'लालजी' होने के कारण आप जनसाधारण में 'लाल बाबा महाराज' के नाम से विख्यात हुए । आप असाधारण विद्वान् थे । आपने मध्यमा के चारों खण्डों की परीक्षा एक ही बार में उत्तीर्ण की थी । आपने ज्योतिष, व्याकरण, तंत्र-मंत्र-यंत्र शास्त्र, श्रीमद् देवी भागवत, श्रीमद् भागवत, कर्मकाण्ड और वेदादि समस्त संस्कृत वांगमय का सांगोपांग अध्ययन किया । श्रीजी महाराज की अनुकम्पा से आप बहुत छोटी अवस्था में ही सर्वशास्त्र निष्णात हो गये । आप तंत्र शास्त्र, मंत्र शास्त्र, यंत्र शास्त्र के सार्वदेशिक विद्वान् थे । संवत् 2001 में आपके पूज्य पितृचरण ब्रह्मपाद श्री केशवदेव जी महाराज के ब्रह्मलीन होने के उपरान्त परम्परानुसार शिष्य सम्प्रदाय ने आपको गद्दी पर विराजमान किया । आपने कलकत्ता के विश्वविख्यात विद्वान् एवं कपालिक सम्प्रदाय के आचार्य श्रीमान् चांबर्दिया ओझा को तंत्र-शास्त्र में नतमस्तक कर उनसे एक अद्भुत श्री यंत्र भेंट में प्राप्त किया । इसी प्रकार सन् 1944-45 के आस-पास कुरुक्षेत्र में एक सूर्य यज्ञ हुआ था । जिसमें सर्वोपरि तीन आचार्यों में से एक आप थे । अन्य दो पद भी भारत के विशिष्ट विद्वानों को ही दिये गये थे । आप गम्भीर एवं अल्पभाषी विद्वान् थे । आपके श्री मुख पर ब्रह्मतेज की ऐसी आभा व्याप्त थी कि आप अंधेरे में बैठे हुए ही स्पष्ट दिखाई देते थे । महाराज श्री के द्वारा रचित तंत्र के अनेक ग्रन्थ हैं । अत्यन्त अल्पावस्था में ही आश्विन शुक्ल एकादशी सं० 2016 को महाराज श्री ब्रह्मलीन हो गये ।

महाराज श्री के ज्येष्ठपुत्र सर्वतन्त्र स्वतन्त्र अनन्त श्री विभूषित ब्रह्मपाद श्री लक्ष्मीपति देवाचार्य जी महाराज का जन्म आश्विन कृष्ण प्रतिपदा सं० 1990 में हुआ था । घर का नाम 'मुन्ना जी' होने के कारण आप जन सामान्य में मुन्नाबाबा महाराज के नाम से विख्यात हुए । जब आपके पितृचरण श्री शिवप्रकाश देवजी महाराज का कैलाशवास हुआ तब आप बी.डी.ओ. के पद पर कार्यरत थे । परिवार की परम्परानुसार आप उक्त पद से त्यागपत्र देकर गद्दी पर विराजमान हुए । आप तंत्र-शास्त्र, मंत्र-शास्त्र एवं यंत्र-शास्त्र तथा ज्योतिष के सार्वदेशिक विद्वान् थे । आप एक वाणीसिद्ध महापुरुष और एकनिष्ठ उपासना एवं तन्त्रज्ञान की तपोमूर्ति थे । अपने पिताश्री के ही समान आप अत्यन्त गम्भीर एवं अल्पभाषी विद्वान् थे ।

आप तंत्र ज्ञान की अद्वैत मूर्ति थे अतः आपने अपने तंत्र ज्ञान से असंख्य शिष्यों का कल्याण किया । आपने अपने तन्त्र ज्ञान के बल से समय-समय पर अनेक चमत्कार दिखाये । ‘महाराज श्री’ तन्त्र का प्रयोग ‘विश्व कल्याण के लिये करने के समर्थक थे और महाराज श्री का जीवन उनके इसी दृढ़ विश्वास का ज्वलन्त उदाहरण है। महाराज श्री निष्काम कर्मयोगी थे और एक सच्चे सन्यासी एवं सच्चे योगी थे । महाराज श्री ने गृहस्थ आश्रम में रहते हुए भी वैराग्य का एक अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया ।

आप वेदान्त के गूढ़ ब्रह्मतत्त्व का वर्णन बड़े ही सरल शब्दों में किया करते थे। महाराज श्री कहा करते थे कि सत्य और ज्ञान पर्यायवाची हैं । जो सत्य से प्रेम करेगा वही ज्ञान से भी प्रेम कर सकता है। आप भक्ति की पुरजोर वकालत करते और कहते कि ज्ञान भक्ति का विरोधी नहीं अपितु भक्ति में जो अज्ञान है उसका निषेधक है।

महाराज श्री, श्री दुर्गा सप्तशती एवं श्रीमद् भगवद्गीता के प्रकाण्ड विद्वान् थे और आपकी शिव गीता एवं श्रीमद् भगवद् गीता में विशेष श्रद्धा थी । महाराज श्री के दिन का प्रारम्भ श्रीमद्भगवद् गीता एवं सौन्दर्य लहरी के श्लोकों को बोलते हुए और आचार्य शंकर के ‘भज गोविन्दम् – भज गोविन्दम्’ को गुनगुनाते हुए होता था । गीता के बारे में महाराज श्री बहुधा अपने प्रवचनों में कहा करते थे कि यह शास्त्रों का सार है और गीता तत्त्व का ज्ञानी किसी भी वेदान्ती से महान है। आप हिन्दू धर्म के मुख्य दर्शन ‘सर्वेभवनतु सुखिनः’ के प्रबल समर्थक थे । संवत् 2055 माघ शुक्ल षष्ठी के दिन महाराज श्री ने अन्तिम समाधि लगाकर अपने चित्त को परब्रह्म में स्थिर कर लिया और अपनी इह लोक लीला समाप्त की । महाराज श्री ने श्री भुवनेश्वरी पंचांग, श्री काली पंचांग आदि तन्त्र ग्रन्थों की रचना की ।

अनन्त श्री विभूषित श्री सुरेश बाबा महाराज अत्यन्त अल्पभाषी विद्वान् और श्री विद्या के सिद्ध उपासक थे । आपने मध्यमा के चारों खण्डों की परीक्षा एक ही बार में उत्तीर्ण की। आप व्याकरण ज्योतिष एवं वेद-वेदान्त जैसे विषयों के साथ आचार्य एवं शिक्षा-शास्त्री थे और आपको श्रीविद्या पर विशेषाधिकार प्राप्त था । आपको वर्ष सन् 1986 में ठा0 श्रीजी महाराज ट्रस्ट (रजि0) का संस्थापक अध्यक्ष बनने का गौरव प्राप्त हुआ । उपरोक्त ट्रस्ट द्वारा ही ‘श्री विद्या शोध संस्थान’ का पुनः प्रवर्तन एवं संवर्धन वर्ष सन् 1986 में किया गया जिसमें वेद-वेदान्त, मन्त्र-तन्त्र एवं यन्त्र के अलावा ज्योतिष एवं पौरोहित्य के अध्ययन-अध्यापन एवं शोध के प्रकल्प सन्निहित हैं। संवत् 2070 माघकृष्ण पंचमी के दिन महाराज श्री ने अपने चित्त को पराम्बा श्री राजराजेश्वरी भगवान् श्रीजी महाराज में स्थिर कर इह

लोक से प्रस्थान किया। श्रीजी दरबार की परम्परानुसार शिष्यों ने आपके पुत्र श्रीपाद आचार्य श्रीकान्त श्रीजी महाराज को गुरु गादी पर विराजमान किया गया। श्रीकान्त श्रीजी महाराज ने वेदवेदान्त जैसे विषयों के साथ संस्कृत में एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की है। आप श्रीमद् देवी भागवत श्रीमद् भागवतादि पुराणों के सुमधुर प्रवक्ता हैं और प्रसिद्ध धर्मोपदेशक हैं। आप ज्योतिषाचार्य हैं और वेदान्त भूषण और साहित्यतीर्थ सम्मान प्राप्त हैं। श्रीकान्त श्रीजी महाराज श्रीजी दरबार की परम्परा के योग्य अधिकारी हैं। आप ठाकुर श्रीजी महाराज ट्रस्ट के संरक्षक तो हैं ही स्वामी श्री हरिदासाराध य ठाकुर श्री बाँकेबिहारी जी मन्दिर, वृन्दावन की प्रबन्ध कमेटी के सदस्य भी हैं।

नमो गुरुभ्यो गुरु पादुकाभ्यो । नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः ।

आचार्य सिद्धेश्वर पादुकाभ्यो । नमोऽस्तु लक्ष्मीपति गुरुपादुकाभ्यो ।।

द्वारा :- श्री विद्या शोध संस्थान

यज्ञशाला सत्संग भवन

श्रीपीठ श्रीजी मन्दिर, बड़ी हवेली

महाराज श्री की ठेक, गताश्रम टीला, मथुरा

संवत् २०७७ अन्तर्गत सूर्य चन्द्रादिक ग्रहण

इस विक्रम संवत् २०७७ के अन्तर्गत भू-मंडलीय ग्रह गणना नियामक ५ ग्रहणों का प्रारूप गणितागत प्राप्त हो रहा है। इनमें से २ सूर्य ग्रहण तथा ३ मान्य चन्द्र ग्रहण होंगे। परन्तु भारतवर्षीय भू भाग देश में एक सूर्य ग्रहण तथा २ मान्य चन्द्र ग्रहण दृश्य होंगे।

(1) मान्य चन्द्रग्रहण - ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष १५ शुक्रवार तारीख ५.६.

२०२० ई. को मान्य चन्द्रग्रहण का स्पर्श राशि ११.१६ मध्य रात्रि शेष १२.५५ एवं मोक्ष रात्रि शेष २.३४ बजे होगा। यह ग्रहण उत्तरी अमेरिका, ग्रीनलैण्ड, दक्षिण अमेरिका का पश्चिमी भाग, रशिया का पूर्वोत्तर भाग आदि को छोड़कर शेष सम्पूर्ण विश्व में दृश्य होगा। इस ग्रहण का धार्मिक दृष्टि से कोई महत्व नहीं है। इसमें किसी भी प्रकार का यम-नियम-सूतक आदि मान्य नहीं होगा।

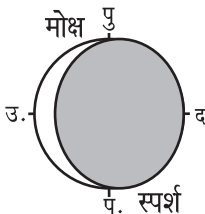
(2) कंकणाकृति/खण्डग्रास सूर्य ग्रहण - संवत् २०७७ आषाढ

कृष्ण पक्ष ३० रविवार तारीख २१.६.२०२० ई. को होगा। इस विषयक संहिता प्रतिफल का राशि फल सूतकादि हेतु स्पष्टता यह कि यह ग्रहण मृगशिरा एवं आर्द्रा नक्षत्र तथा मिथुन राशि मण्डल पर मान्य है। अतः इन नक्षत्र राशि वालों को ग्रहण दर्शन नहीं करना चाहिये। अपितु अपने इष्टदेव की आराधना, गुरु मंत्र जाप एवं धार्मिक ग्रंथ का पठन-मनन करना चाहिए।

खण्डग्रास सूर्य ग्रहण

संवत् २०७७ आषाढ कृष्ण पक्ष ३०
रविवार ता. २१.६.२०२० ई.

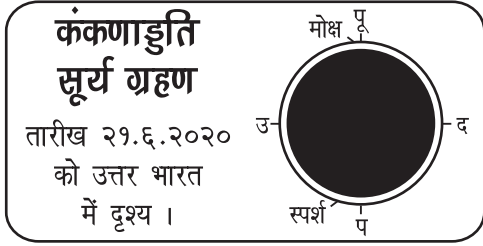
समय	स्पर्श	मध्य	मोक्ष	पर्व
घटी	१०	१४	१६	०८
पल	४८	५३	२५	३८
घंटा	१०	११	०१	०३
मिनट	०६	४७	३६	२७



मेष, सिंह, कन्या, मकर राशि हेतु दर्शन करना शुभ। वृषभ, तुला, धनु, कुम्भ राशि हेतु सामान्य मध्यम फल एवं मिथुन, कर्क, वृश्चिक, मीन राशि हेतु नेष्ट अशुभ दर्शन योग्य नहीं। यह ग्रहण भारत वर्षीय भू-भाग के अलावा म्यांमार, दक्षिणी रूस, मंगोलिया, बांग्लादेश, श्रीलंका, थाईलैण्ड, मलेशिया, कोरिया, जापान, इण्डोनेशिया, पूर्वी ऑस्ट्रेलिया, अफ्रीका, ईरान, ईराक, अफगानिस्तान, नेपाल, पाकिस्तान आदि में खण्डग्रास रूप में दृश्य होगा।

अफ्रीका के कुछ क्षेत्र, यमन, ओमान, दक्षिणी चीन का कुछ भाग, ताइवान तथा भारत में-पोखरी,

उखीमठ, अगस्तमुनि, चौपटा, झेलम, टेहरी, चंबा, देहरादून, जगधारी, यमुनापार, शरीफगढ़, कुरुक्षेत्र, थानेसर, नंदादेवी नेशनल पार्क, अनूपगढ़, श्री विजयनगर, अमरपुरा, जातन, सूरतगढ़, मेहरवाला, सिलवालाखुर्द, चमोली, जोशीमठ, पीपल कोटि, रूद्रनाथ, गोपेश्वर आदि में कंकणाकृति सूर्यग्रहण दृश्य होगा।



इस ग्रहण का सूतक यम-नियम तारीख २०.६.२०२० को रात्रि १०.०६ बजे से मान्य तथा तारीख २१.६.२०२० को ग्रहण का स्पर्श दिन में १०.०६ बजे से मान्य तथा मोक्ष शुद्धिकाल दिन में १.३६ बजे स्पष्ट है। यह सूर्यग्रहण महिला, नवविवाहिता, कन्या, विवाह योग्य बालक-बालिका, उद्योगपति, मंत्री, धर्मनेता पर भी प्रभार सूचक एवं दर्शन योग्य नहीं। ग्वार, ज्वार, मक्का, तेल, कपास, रुई, बाजरा, मूंग, मोठ, उड़द, मूंगफली, बिनोला, जूट, चावल, बारदाना, मूल, केशर, पुस्तक, पत्र-पत्रिका प्रकाशन आदि वस्तु का कार्य व्यवसाय भवी लाभप्रद बन पावे।

(३) मान्द्य चन्द्र ग्रहण - आषाढ शुक्ल पक्ष १५ रविवार तारीख ५.७.२०२० ई. को मान्द्य चन्द्र ग्रहण का भारतीय समय से स्पर्श दिन में ८.३७ बजे एवं मोक्ष दिन में ११.२२ बजे होगा। यह ग्रहण भारत, आस्ट्रेलिया, इरान, ईराक, रूस, चीन, मंगोलिया तथा भारत के सभी पड़ोसी देशों को छोड़कर शेष सम्पूर्ण विश्व में दृश्य होगा। इस ग्रहण का धार्मिक दृष्टि से कोई महत्व नहीं है। इसमें किसी भी प्रकार का यम-नियम सूतक आदि मान्य नहीं होगा।

(४) मान्द्य चन्द्र ग्रहण - कार्तिक शुक्ल पक्ष १५ सोमवार तारीख ३०.११.२०२० ई. को मान्द्य चन्द्र ग्रहण का भारतीय समय से स्पर्श दिन में १.०२ बजे एवं मोक्ष दिन में ५.२३ बजे होगा। यह ग्रहण भारत में कारगिल, उत्तर काशी, लैंसडाउन, बरेली, अम्बेडकर नगर, कानपुर, चित्रकूट, रीवा, श्री काकुलम इन नगरों तथा इन नगरों से पूर्व के सभी नगरों में दृश्य होगा। परन्तु दक्षिण-पश्चिमी भारत, अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया, अन्टार्कटिका आदि में ग्रहण दृश्य नहीं होगा। इस ग्रहण का धार्मिक दृष्टि से कोई महत्व नहीं है। इसमें किसी भी प्रकार का यम-नियम-सूतक आदि मान्य नहीं होगा।

(५) खग्रास/खण्डग्रास सूर्य ग्रहण - मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष ३० सोमवार तारीख १४.१२.२०२० ई. को खग्रास/खण्डग्रास सूर्यग्रहण होगा। इसका भारतीय समय से स्पर्श शाम ७.५४ बजे एवं मोक्ष रात्रि शेष १२.२३ बजे होगा। यह

ग्रहण दक्षिणी अमेरिका में ब्राजील के दक्षिण, साउथ अफ्रीका के दक्षिणी छोर तथा अन्टार्कटिका महाद्वीप के उत्तरी छोर पर ही दृश्य होगा । भारत में यह ग्रहण दृश्य नहीं होगा । इस ग्रहण का धार्मिक दृष्टि से भारत में कोई महत्व नहीं है। इसमें किसी भी प्रकार का यम-नियम-सूतक आदि मान्य नहीं होगा ।



**कृमयः किं न जीवन्ति भक्षयन्ति परस्परम् ।
परलोकाविरोधेन यो जीवति स जीवति ।।**

(व्यास स्मृति)

भगवान व्यास कहते हैं कि कीट पतंगादि भी क्या जीवन निर्वाह नहीं करते ? कि जो एक दूसरे को खा लेते हैं । अर्थात् कीट पतंगादिकों का जीवन दूसरे के लोक का विरोधी है वे परभक्षी हो जीवन निर्वाह करते हैं । किन्तु वास्तव में तो वही जीता है जो दूसरे के लोक का अविरोध करते हुए जीता है ।

**किं धनेन करिष्यन्ति देहिनोऽपिगतायुषः ।
यद्वर्द्धमितुमिच्छन्तस्तच्छरीरमशाश्वतम् ।।
अशाश्वतानिमित्तानि विभवो नैव शाश्वतः ।
नित्यं सन्निहितो मृत्युः कर्तव्यो धर्मसंग्रहः ।।**

(व्यास स्मृ.)

वृद्ध मनुष्य धन से क्या करेंगे, जिस शरीर का पोषण धन से किया जिसके सुन्दर सुडौल स्वस्थ होने की चिन्ता की वह भी अशाश्वत है और धन से जो भोग भोगे जा सकते हैं, वे भी अशाश्वत हैं, अनित्य हैं, ठहरने वाले नहीं हैं । केवल मृत्यु ही शाश्वत हैं ऐसे में धर्म संग्रह ही कर्तव्य है ।

प्रवचन



श्रीसत्य सनातन धर्मो विजयतेतरां



जय जय श्रीजी परम कृपालु , शिव कामेश्वर वृहद गोपाल

॥ श्री हरिः ॥

" *ब्राह्मणस्य तु देहोऽयं , न कामार्थाय जायते ।

ब्राह्मण्यं बहुभिरवाप्तये तपोभिस्तल्लब्ध्वा न रतिपरेण हेलितव्यं ।

स्वाध्याये तपसि दमे च नित्ययुक्तः

क्षेमार्थं कुशलपरः सदा यतस्व ॥" (महाभारत शांतिपर्व)

- अर्थात् ब्राह्मण का यह शरीर, यह ब्राह्मण जन्म भोगोपभोग के लिए, भोग भोगने के लिए पैदा नहीं होता है । बहुत समय तक बड़ी भारी तपस्या करने से ब्राह्मण का शरीर मिलता है । उसे पाकर विषयानुराग में फंसकर उसे व्यर्थ नहीं करना चाहिए । अतः यदि तुम अपना कल्याण चाहते हो तो कुशलप्रद कर्म में संलग्न हो सदा स्वाध्याय, तपस्या और इन्द्रिय संयम में पूर्णतः तत्पर रहने का प्रयत्न करो ।.....

देखिये, श्री भगवान् कहते हैं कि "बहूनां जन्मनावन्तो ज्ञानवान् मां प्रपद्यते "बहुत से जन्मों के पश्चात् ज्ञानवान् अर्थात् ब्राह्मण का जन्म मिलता है ; ऐसा क्यों ? ब्राह्मण कौन है ? अरे इस संसार पर अनुग्रह करने की इच्छा से ब्रह्म ने जो ईश्वरीय अद्वैत ज्ञान के साथ पृथ्वी पर भेजे हैं, वे ब्राह्मण हैं - "ईश्वरानुग्रहादेवपुंसांऽद्वैतवासान् महद्भ्यः परित्वाणाद विप्राणामुपजायते ॥" ब्रह्म की तो महिमा ही ऐसी है कि जब उसने ब्रज में जन्म लिया तो साधारण ब्रज गोपी जो अहीरिन थीं, वे भी कहने लगीं कि " कृष्णोऽहम् पश्चतर्गतिं ललितं इति तनमनाः - अरी सखी, देख देख मैं कृष्ण हूँ! कितनी ललित गति से चलता हूँ ।

परिणाम में महान् आचार्यों ने भी उन्हें अपना गुरु माना । तो कहने का आशय यह है कि यह जो ब्राह्मण जन्म मिला है जिसमें ब्रह्माद्वैत का अनुभव संभव है उसका सदुपयोग करो । हमारे पितामह महाराज कहा करते थे कि ब्राह्मण का जन्म पाकर भी यदि ब्रह्म न हो सके, ब्रह्म को न पा सके तो सबकुछ व्यर्थ है ।

देखो ब्राह्मण का जन्म मिलते ही ब्रह्माद्वैत के साधन अवोर्ड में मिलते हैं ; प्रथम ब्रह्म सूत्र जिसमें सृष्टि के सभी देवताओं, त्रिदेव आदिक सभी का आह्वान किया जाता है द्वितीय वेदमाता गायत्री । "सविता देवानां प्रसविता" - देवों की जननी सावित्री, वेदों की जननी सावित्री । इन सावित्री की, गायत्री की महिमा ऐसी है कि इनके जप से ब्रह्माद्वैत सिद्ध हो ही जाता है , लोक को यही शिक्षा देने के लिए ही तो श्री राम - श्री कृष्ण सभी गायत्री जप अत्यंत निष्ठा पूर्वक " ब्रह्म जजाप्य" किया करते हैं । अतः ब्राह्मण जन्म में स्वरूपनुसन्धान के साधन भी न्यूनाधिक मिल ही जाते हैं , अब तो बस एक ही कमी रहती है कि श्री हरि का अनुग्रह मानकर उनके प्रति कृतज्ञता का भाव और स्वधर्म पालन -

" हरि तुम् बहुत अनुग्रह कीनों , साधन धाम विबुध दुर्लभ तन । मोहि अनुग्रह दीनो । हरि तुम् बहुत अनुग्रह कीनों ।"

जहां तक धर्म और सम्प्रदाय कि बात है हम सदैव भ्रमित रहते हैं confused रहते हैं । देखो जी , हमें सर्वप्रथम यह समझना होगा कि वैदिक धर्म/ श्रौत धर्म गंतव्य है, साध्य है और संप्रदाय मार्ग हैं , साधन हैं ।

यदि हम यह भली प्रकार समझ गये की मनुष्य जीवन का एक मात्र उद्देश्य स्वस्वरूपनुसन्धान है तब सब कुछ बड़ा आसान हो जाएगा - "स्वरूपानुसन्धान धर्म इत्यभिदीयते"। जिस अंतर को जानने के लिये हम परेशान हैं, वह स्वयमेव ही हमें स्पष्ट हो जाएगा।

देखिये, मानव मात्र का धर्म है, सनातनधर्म है, अजी स्रष्टि के आदि से धर्म है, स्वस्वरूप का अनुसंधान और यही वैदिक सनातन धर्म का उद्देश्य है। सम्प्रदाय मार्ग हैं, गंतव्य नहीं; साधन हैं, साध्य नहीं। अब प्रश्न उत्पन्न हुआ कि ऐसा ही है तो कि वैदिक सनातन धर्म में इतने सम्प्रदाय क्यों? महाराज, इतने सम्प्रदाय होना आवश्यक है, अनिवार्य है। देखो, "महाभाग्याद एकैकस्यापि बहूनि नाम धेयानि भवन्ति" "एकं सदविप्रा बहुधा वदन्ति" इत्यादि के अनुसार एक अद्वय ब्रह्म ही विविध नाम रूपों में स्तुत्य है। यह ठीक इसी प्रकार है जैसे कि किसी को श्रेष्ठ अभिनेता कह देने से यह स्पष्ट नहीं होता कि वह महान योगी भी है, अतः उसे श्रेष्ठ अभिनेता और महान योगी दोनों ही स्पष्ट रूप से कहना होगा अतः दो नाम और रूप होंगे, अस्तु।

दूसरे, सनातन धर्म में इष्ट के स्वरूप का चुनाव करने की स्वतंत्रता है। देखो, देवर्षि असित के पौत्र और देवल पुत्र महर्षि शांडिल्य जो भगवान श्रीकृष्ण के परम गुरु थे, स्पष्ट कहते हैं कि - "ध्याननियमस्तु दृष्टसौकर्यात्" अर्थात् ध्यान नियम दृष्ट/साध्य की सुगमता के लिए ही है। आशय यह है ब्रह्म के विविध स्वरूपों में से जिस साधक विशेष का चित्त ईश्वर के जिस स्वरूप में सर्वाधिक लगे, ब्रह्म का वही स्वरूप उसका स्वाभाविक ईश्वर है। अतः एक से अधिक सम्प्रदाय श्री सत्य सनातन धर्म की आवश्यकता ही नहीं, साध्य को सम्यक् रूपेण प्राप्त करने के लिए, अनिवार्यता हैं। देखो सभी की रुचि एक जैसी नहीं होती "रुचीनां वैचित्र्याद" किसी को ऐश्वर्य पसंद है तो किसी को वैराग्य। किसी की राम में अधिक आसक्ति है तो किसी की कृष्ण में। ये तो हुई सम्प्रदायों की बात, अब मुख्य वैदिक धर्म की भी एक बात है।

सभी सम्प्रदायों में आज भी सर्वमान्य है "ब्रह्मसूत्र" या यज्ञ सूत्र / जनेऊ परंपरा, यज्ञोपवीत। यह किसी भी सम्प्रदाय में किसी प्रकार बाधक नहीं हो सकती क्योंकि "ब्रह्मसूत्र" प्रदान करते समय जो मंत्र दिया जाता है उसके ध्येय; जगत उत्पादक माता गायत्री / सावित्री / सविता हैं। तीनों वर्णों के लिए गायत्री मुख्य उपास्य हैं। वास्तव में तो आदित्य, गणेश, देवी, शिव तथा केशव किसी भी स्वरूप की उपासना, एकमात्र ब्रह्म सूत्र मंत्र या गायत्री मंत्र द्वारा की जा सकती है किन्तु फिर भी साधक को ऐसा लगता हो कि किसी सम्प्रदाय विशेष में दीक्षित हो। तब उसे अपने चित्त की आसक्ति के अनुसार ही इष्ट का निश्चय करना चाहिए। यहां यह समझ लेना आवश्यक है कि जो वेद में निष्ठा रखते हैं, ब्रह्मसूत्र या जनेऊ धारण करते हैं - वे वैदिक हैं।

वैदिकों के यहां वेद प्रधान हैं श्रुति प्रधान है और सब कुछ गौण, वे सब में श्रद्धा तो रखेंगे किन्तु श्रुति से अविरुद्ध। आशय यह है कि वैदिकों के यहां वेद तथा वेदोक्त कर्म एवं तदनुसारी लिङ्गों का प्राधान्य होता है और तद-अविरुद्ध प्रकार से ही विष्णु शिव आदि देवताओं की उपासना होती है। वैदिक सद्गृहस्थों को अपने इष्ट के स्वरूप से भिन्न किसी स्वरूप की निंदा करने का तो अवकाश ही नहीं है। अपितु "सर्वं खल्विदं ब्रह्म" - यह सब कुछ ब्रह्म है इस भाव ही अभीष्ट है अर्थात् सभी स्वरूप मेरे इष्ट के हैं यही भाव अभीष्ट है। यही अनन्य भक्ति है, इससे इतर नहीं।

(श्री पाद आचार्य श्रीकांत श्री श्रीजी महाराज के प्रवचन से साभार)

प्रस्तुती:

श्री वैदिक सनातन धर्म प्रकाशन

यज्ञशाला / सत्संभवन, श्रीपीठ, श्री श्रीजी मंदिर,

बड़ी हवेली- श्रीजी दरबार, महाराजश्री कि ठेक,

गतश्रम टीला, मथुरा

नव-वर्षीय विक्रमाब्दशाके मध्ये ईस्वीमासदिनांकोपरि दिनदशा ज्ञानार्थ सुगमसारिणी/राशि के अनुसार मास दशा

मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ	इ, उ, ए ओ, वा, वि वू, वे, वो	का, की, कू घ, ड, छ के, को, हा	ही, हू, हे हो, डा, डी डू, डे, डी	मा, मी, मू मे, मो, व टी, टू, टे	टो, पा, पी पू, ष, ण ठ, पे, पो
13 अप्रैल से सूर्यदशा दिन 20 प्रवे.	14 मई से सूर्यदशा दिन 20 प्रवे.	3 अप्रैल से शुक्रदशा दिन 70 प्रवे.	22 मार्च से राहुदशा दिन 42 प्रवे.	22 अप्रैल से राहुदशा दिन 42 प्रवे.	24 मार्च से गुरुदशा दिन 58 प्रवे.
4 मई से चंद्रदशा दिन 50 प्रवे.	4 जून से चंद्रदशा दिन 50 प्रवे.	15 जून से सूर्यदशा दिन 20 प्रवे.	4 मई से शुक्रदशा दिन 70 प्रवे.	4 जून से शुक्रदशा दिन 70 प्रवे.	22 मई से राहुदशा दिन 42 प्रवे.
25 जून से भौमदशा दिन 28 प्रवे.	27 जुलाई से भौमदशा दिन 28 प्रवे.	6 जुलाई से चंद्रदशा दिन 50 प्रवे.	16 जुलाई से सूर्यदशा दिन 20 प्रवे.	16 अगस्त से सूर्यदशा दिन 20 प्रवे.	6 जुलाई से शुक्रदशा दिन 70 प्रवे.
25 जुलाई से बुधदशा दिन 56 प्रवे.	25 अगस्त से बुधदशा दिन 56 प्रवे.	27 अगस्त से भौमदशा दिन 28 प्रवे.	6 अगस्त से चंद्रदशा दिन 50 प्रवे.	6 सितम्बर से चंद्रदशा दिन 50 प्रवे.	17 सितम्बर से सूर्यदशा दिन 20 प्रवे.
21 सित. से शुक्रदशा दिन 36 प्रवे.	21 अक्टू. से शुक्रदशा दिन 36 प्रवे.	25 सित. से बुधदशा दिन 56 प्रवे.	27 सित. से भौमदशा दिन 28 प्रवे.	27 अक्टू. से भौमदशा दिन 28 प्रवे.	7 अक्टू. से चंद्रदशा दिन 50 प्रवे.
27 अक्टू. से गुरुदशा दिन 58 प्रवे.	26 नव. से गुरुदशा दिन 58 प्रवे.	20 नव. से शनिदशा दिन 36 प्रवे.	25 अक्टू. से बुधदशा दिन 56 प्रवे.	24 नव. से बुधदशा दिन 56 प्रवे.	26 नव. से भौमदशा दिन 28 प्रवे.
24 दिस. से राहुदशा दिन 42 प्रवे.	22 जन. से राहुदशा दिन 42 प्रवे.	25 दिस. से गुरुदशा दिन 58 प्रवे.	19 दिस. से शनिदशा दिन 36 प्रवे.	18 जन. से शनिदशा दिन 36 प्रवे.	23 दिस. से बुधदशा दिन 56 प्रवे.
3 फर. से शुक्रदशा दिन 70 प्रवे.	4 मार्च से शुक्रदशा दिन 70 प्रवे.	20 फर. से राहुदशा दिन 42 प्रवे.	24 जन. से गुरुदशा दिन 58 प्रवे.	22 फर. से गुरुदशा दिन 58 प्रवे.	17 फर. से शनिदशा दिन 36 प्रवे.

नव-वर्षीय विक्रमाब्दशाके मध्ये ईस्वीमासदिनांकोपरि दिनदशा ज्ञानार्थ सुगमसारिणी/राशि के अनुसार मास दशा

तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते	तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू,	ये, यो, भा भो, भू, धा फा, द्वा, मे	भो, ज, जी, जू जे, जो, खा, खी खू, खे, खो, गा	गू, गे, गो सा, सी, सू सो, दा	दी, दु, थ झ, ज, दे झ, चा ची
18 मार्च से शनिदशा दिन 36 प्रवे.	17 अप्रैल से शनिदशा दिन 36 प्रवे.	22 मार्च से बुधदशा दिन 56 प्रवे.	24 मार्च से भौमदशा दिन 28 प्रवे.	23 अप्रैल से भौमदशा दिन 28 प्रवे.	3 अप्रैल से चंद्रदशा दिन 50 प्रवे.
23 अप्रैल से गुरुदशा दिन 58 प्रवे.	25 मई से गुरुदशा दिन 58 प्रवे.	18 मई से शनिदशा दिन 36 प्रवे.	21 अप्रैल से बुधदशा दिन 56 प्रवे.	22 मई से बुधदशा दिन 56 प्रवे.	25 मई से भौमदशा दिन 28 प्रवे.
24 जून से राहूदशा दिन 42 प्रवे.	25 जुलाई से राहूदशा दिन 42 प्रवे.	25 जून से गुरुदशा दिन 58 प्रवे.	19 जून से शनिदशा दिन 36 प्रवे.	20 जुलाई से शनिदशा दिन 36 प्रवे.	24 जून से बुधदशा दिन 56 प्रवे.
6 अगस्त से शुक्रदशा दिन 70 प्रवे.	6 सितम्बर से शुक्रदशा दिन 70 प्रवे.	25 अगस्त से राहूदशा दिन 42 प्रवे.	27 जुलाई से गुरुदशा दिन 58 प्रवे.	27 अगस्त से गुरुदशा दिन 58 प्रवे.	21 अगस्त से शनिदशा दिन 36 प्रवे.
17 अक्टू. से सूर्यदशा दिन 20 प्रवे.	16 नव. से सूर्यदशा दिन 20 प्रवे.	7 अक्टू. से शुक्रदशा दिन 70 प्रवे.	25 सित. से राहूदशा दिन 42 प्रवे.	25 अक्टू. से राहूदशा दिन 42 प्रवे.	27 सित. से गुरुदशा दिन 58 प्रवे.
6 नव. से चंद्रदशा दिन 50 प्रवे.	6 दिस. से चंद्रदशा दिन 50 प्रवे.	15 दिस. से सूर्यदशा दिन 20 प्रवे.	6 नव. से शुक्रदशा दिन 70 प्रवे.	6 दिस. से शुक्रदशा दिन 70 प्रवे.	24 नव. से राहूदशा दिन 42 प्रवे.
25 दिस. से भौमदशा दिन 28 प्रवे.	24 जन. से भौमदशा दिन 28 प्रवे.	4 जन. से चंद्रदशा दिन 50 प्रवे.	14 जन. से सूर्यदशा दिन 20 प्रवे.	12 फर. से सूर्यदशा दिन 20 प्रवे.	4 जन. से शुक्रदशा दिन 70 प्रवे.
22 जन. से बुधदशा दिन 56 प्रवे.	20 फर. से बुधदशा दिन 56 प्रवे.	22 फर. से भौमदशा दिन 28 प्रवे.	2 फर. से चंद्रदशा दिन 50 प्रवे.	4 मार्च से चंद्रदशा दिन 50 प्रवे.	14 मार्च से सूर्यदशा दिन 20 प्रवे.

श्री वैदिक सनातन धर्म परिषद् के उद्देश्य

(श्री श्रीजी दरबार धर्मार्थ न्यास का एक आनुषांगिक संगठन)

श्री वैदिक सनातनधर्म परिषद् मानव कल्याण के महाव्रत के साथ श्री श्रीजी दरबार धर्मार्थ न्यास द्वारा गठित की गयी है। महाव्रत की शास्त्रीय परिभाषानुसार :

‘जातिदेशकाल नियमान्न विच्छिन्ना सार्वभौमाः महाव्रतम् ।’

अर्थात् जाति, देश और काल के नियम से अविच्छिन्न महाव्रत हैं। अतः स्पष्ट है कि श्री वैदिक सनातनधर्म परिषद् का गठन जाति, देश और काल के नियम से अविच्छिन्न है।

1. विश्वकल्याणः सम्पूर्ण विश्व को सुख पहुँचाना इस सभा का मुख्य उद्देश्य है।
2. ‘मथ्यते तु जगत्सर्वं ब्रह्म ज्ञानेन येन हि । तत्सारं भूतं यद्यत् स्यात् मथुरा सा निगद्यते ।’ आदि श्रुति वाक्यों के अनुसार मथुरा के ऐतिहासिक वैदिक एवं ब्रह्मनिष्ठ स्वरूपानुकूल वेद-वेदान्त, धर्मशास्त्र आदि के अध्ययन-अध्यापन की निःशुल्क व्यवस्था करना एवं समाज के बौद्धिक आध्यात्मिक विकास हेतु पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन की व्यवस्था करना।
3. ‘गवां विश्वस्य मातरः’ आदि शास्त्रवाक्यों के अनुसार गौ-संरक्षण के उद्देश्य से विशाल गौशालाओं का निर्माण करना एवं असहाय, बीमार एवं वृद्ध गायों का पालन-पोषण, सेवा तथा बीमार गायों के उपचार हेतु व्यवस्था करना।
4. ब्रज क्षेत्र की जीवनधारा ‘श्री यमुना’ की प्रदूषण मुक्ति हेतु यथासंभव प्रयास करना एवं इस हेतु प्रयासरत अन्य संस्थाओं से सहयोग करना।
5. असहाय व्यक्तियों के लिए अन्नक्षेत्र, पेयजल आदि की व्यवस्था एवं उनके ठहरने के लिए आश्रम, आलय आदि का निर्माण एवं व्यवस्था।
6. श्रीपीठ-श्रीजी मंदिर द्वारा समय-समय पर आयोजित जयन्तियों, पर्वों एवं रथयात्रादि अन्य उत्सवों के आयोजन में सहयोग।
7. जो-जो मनुष्य इस परमहितकारी कार्य में तन-मन-धन से प्रयत्न और सहायता करें, वह-वह इस सभा में प्रतिष्ठा के योग्य होंगे।
8. यह कार्य सर्वहितकारी है - इसलिये सह सभा भूगोलस्थ मनुष्यजाति से सहायता की पूरी आशा रखती है।
9. जो-जो सभा देश-देशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर में परोपकार करना अभीष्ट रखती है, वह-वह इस सभा की सहायकारिणी समझी जायेगी।
10. जो-जो मनुष्य राजनीति एवं प्रजा के अभीष्ट से विरुद्ध स्वार्थी, क्रोधी और अविद्यादि दोषों से प्रमत्त होकर राष्ट्र, राष्ट्राधिप और राष्ट्रवासियों के लिये अनिष्ट कर्म करे, वह-वह इस सभा से सम्बन्धित न समझा जाये।
11. समान उद्देश्य की अन्य संस्थाओं का उनके उद्देश्य प्राप्ति में सहयोग एवं लोक-कल्याण के उद्देश्य हेतु प्रकाश, स्वच्छता एवं पेयजलादि की व्यवस्था।

यदि आप परिषद् की उक्त उद्देश्यों में किसी भी प्रकार का सहयोग करना चाहते हैं तो कृपया परिषद् के पदाधिकारियों से सम्पर्क करें।

सुरेश विट्ठलदास चतुर्वेदी
फाउण्डेशन
का धर्मादा प्रकल्प

SV

एस वी सी हैल्थ केयर

(लागत मूल्य वाली विश्वसनीय दवाई की दुकान)

ट्रस्ट द्वारा सस्ती दवाईयाँ

1, सूरज मार्केट, होटल श्याम इन कॉम्प्लैक्स
गुरुद्वारे के पास, होली गेट, मथुरा - 281001

फोन : 2400166, 2400167

ई मेल : svchealthcare@gmail.com

Gopaldas B. Chaturvedi

Vrajraj

RUBBER PRODUCTS



**GOPAL DAS B. CHATURVEDI
YASH G. CHATURVEDI**

**VRAJ RAJ RUBBER PRODUCTS &
VRAJ RAJ AQUA**

Mfrs : RUBBER BALLOONS &
R.O. DRINKING WATER.
(M) 9376210799, 8000218555.



Factory : R.S.No. 295 - Gram Ratanpur
Dabhoi Road, Vadodara - 390 004.

अखण्ड भूषण्डाचार्य प्रातः स्मरणीय अनन्त श्री विभूषिताचार्य
उर्ध्वान्नाय सिद्ध श्रीपीठाधीश्वर श्री श्री श्रीपाद् आचार्य



श्री श्री 1008 श्री सुरेश जी बाबा महाराज
(गुरुजी महाराज)



श्रीपाद् आचार्य श्रीकान्त श्रीजी महाराज
(वर्तमान पीठाधीश्वर)

॥ श्री मन्महागणाधिपतये नमः ॥



॥ श्री बाबा महाराजाय नमः ॥